स्वामिनारायण महामंत्र महिमा

पूर्ण पुरुषोत्तम
श्री स्वामिनारायण भगवान

जीवनप्राण
अबजीबापाश्री

श्री स्वामिनारायण मंदिर वासणा संस्था (SMVS)

सत्य, अहिंसा, प्रामाणिकता, पारिवारिक एकता आदि सामान्य आचरण से लेकर आध्यात्मिक दिव्य आचरणों का सिंचन करना और सनातन भगवान स्वामिनारायण की सर्वोपरी उपासना और अनादिमुक्त की आध्यात्मिक अलौकिक स्थिति का आस्वाद लेते हुए एक दिव्य समाज की रचना कर, श्रीजीमहाराज का प्यारा समाज तैयार करना यही इस आध्यात्मिक स्वामिनारायण संस्था का लक्ष्य है।

देश और समाज की प्रत्येक व्यक्ति में आध्यात्मिकता की नई चेतना प्रकट करके जीवन परिवर्तन के महत्त्वपूर्ण कार्य में यह SMVS संस्था सतत सक्रिय रहती है। संस्था के क़रीब १०० संत-पार्षद और क़रीब १०१ त्यागी महिलामुक्तों, १०,००० से अधिक कार्यकर्ता और स्वयंसेवक संस्था द्वारा चल रहे सैकड़ों बाल-बालिका मंडल, युवा-युवती मंडल तथा पुरुष-महिलाओं के संयुक्त मंडल में जीवन परिवर्तन की दिव्य प्रेरणा प्रदान कर अपने जीवन की साफल्यता का अनुभव कर रहे हैं। नए-नए आध्यात्मिक अभियानों द्वारा जन-जन तक पहुंचकर अज्ञान और दुःखरूपी तिमिर को दूर कर, ज्ञान और सुखरूपी प्रकाश फैला रहे हैं।

भारत, यु.के., अमरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, कुवैत, दुबई, केन्या, युगांडा, झाम्बिया आदि देशो में आध्यात्मिक सेवाओं के स्तर को बढ़ाने के साथ-साथ यह संस्था सर्वजनहितावह ऐसे सामाजिक सेवाकार्यों में भी शामिल है। शिक्षा, संस्कार और सत्संग का त्रिवेणी संगम खड़ाकर गुरुकुल जैसे संकुलो का निर्माण करके कई तरुणों के जीवन को आकार देने का सेवाकार्य और ज़रूरतमंदों को शैक्षिक और चिकित्सा सहाय की सेवा से लेकर वस्त्रदान, रोगनिदान कॅम्प, रक्तदान कॅम्प जैसी अनेक सेवाएं और चिकित्सा सेवाओं में विशेष रूप से मेडिकल सेन्टर तथा SMVS स्वामिनारायण अस्पताल आदि सेवाएं भी इस संस्था द्वारा की जाती हैं। चाहे भूकंप या कोरोना की आपदा हो या बाढ़ की तबाही किन्तु जनहित के लिए राहतकार्यों की सेवा में यह संस्था हर जगह खड़े पैर मौजूद रहती है।

संस्था की ऐसी मूल्यवान आध्यात्मिक, सामाजिक तथा सर्वजनहितावह सेवा-परिचर्या का उजाला सर्वत्र जनमानस में फैल चुका हैं। देश और समाज के जन-जन के प्रति यह संस्था अपने सेवाकार्य और आध्यात्मिक मूल्यों की सुगंध फैलाने में सदैव अग्रेसर रही है और आगे भी रहेगी।

स्वामिनारायण

स्वामिनारायण

महामंत्र महिमा

लेखनकार्य

साहित्य लेखन विभाग

प्रकाशक

सत्संग साहित्य डिपार्टमेन्ट
स्वामिनारायण धाम, गांधीनगर - ३८२४२१

स्वामिनारायण
महामंत्र महिमा

रजूकर्ता : स्वामिनारायण मंदिर वासणा संस्था (**SMVS**)

आद्य स्थापक : शुद्ध उपासना प्रवर्तक
प.पू. अ.मु. सद्. श्री देवनंदनदासजी स्वामीश्री
(गुरुदेव प.पू. बापजी)

प्रेरक : प.पू. अ.मु. सद्. श्री सत्यसंकल्पदासजी स्वामीश्री
(गुरुवर्य प.पू. स्वामीश्री)

लेखनकार्य : साहित्य लेखन विभाग

आवृत्ति : षष्ठी, फरवरी-२०२६

प्रकाशक : सत्संग साहित्य डिपार्टमेन्ट
स्वामिनारायण धाम, गांधीनगर-३८२४२१

प्रस्तावना

प्यारे मुक्तों, जय स्वामिनारायण...

हर किसी के जीवन में आधि, व्याधि और उपाधि होती है। किसी को तन का दु:ख, किसी को मन का दु:ख तो किसी को धन का दु:ख जैसी कई उलझनें परेशान करती रहती हैं। यह उलझनें कई तरीके से सुलझाने के लिए कितना भी तनतोड यत्न करते है फिर भी वह सुलझाती नहीं है।

जीवन की यह सारी समस्या से बाहर निकलने के लिए हमें कोई विशेष साधन या उपाय करना रहा नहीं क्योंकि महाप्रभु ने इन सब समस्या का समाधान करने का सर्वश्रेष्ठ उपाय स्वमुख बताया है। सर्वश्रेष्ठ उपाय यानि कि स्वामिनारायण महामंत्र का जाप।

संवत १८५८ मागसर वद एकादशी (दि. ३१-१२-१८०१) के शुभ मंगलकारी दिन महाप्रभु ने यह सर्वोपरी और महाप्रतापी स्वामिनारायण महामंत्र स्वमुख से प्रकाशित किया। इस महामंत्र से सारे संसार की विटंबना दूर हो जाती है। महामंत्र के प्रताप से मुर्दे भी खड़े होते हैं, महामंत्र के प्रताप से भूतप्रेत आदि का संकट मिट जाता है, महामंत्र के प्रताप से महासंकट से बचा जा सकता है, महामंत्र के प्रताप से सद्बुद्धि जागृत होती है, महामंत्र के प्रताप से महारोग दूर हो जाता है, महामंत्र के प्रताप से यमदूत भाग जाते हैं और अंत में महाप्रभु की दिव्य तेजोमय मूर्ति प्राप्त होती है। यह मार्गदर्शिका में सर्वोपरी स्वामिनारायण महामंत्र का महात्म्य निर्देशित करने का प्रयास किया है।

यह पुस्तिका आपके जीवन में सुख और शांति की मार्गदर्शिका समान बन रहेगी ऐसी महाप्रभु के दिव्य चरणों में प्रार्थना।

– साहित्य लेखन विभाग

स्वामिनारायण

अनुक्रमणिका

१. स्वामिनारायण संप्रदाय का प्रारंभिक परिचय..............................५
२. स्वामिनारायण महामंत्र का प्रागट्य..८
३. शीतलदास में से हुए सद्. व्यापकानंद स्वामी..............................१२
४. वचनामृत के आधार से महामंत्र की महिमा..............................१७
५. सद्. गुणातीतानंद स्वामी की बातों में महामंत्र की महिमा...............१८
६. महामंत्र के प्रताप से निर्जन हुई यमपुरी....................................१९
७. महामंत्र के प्रताप से हुआ चारों ओर प्रकाश... प्रकाश....................२०
८. महामंत्र के प्रताप से मुर्दे भी खड़े हुए......................................२१
कुल प्रसंग - ६
९. महामंत्र के प्रताप से भूतप्रेत का संकट टला.......................२९
कुल प्रसंग - ३
१०. महामंत्र के प्रताप से प्राणघातक जहरीले सांप का विष उतर गया.......३४
कुल प्रसंग - ५
११. महामंत्र के प्रताप से महासंकट से बचे....................................३८
कुल प्रसंग - ३
१२. महामंत्र के प्रताप से सद्बुद्धि जगे...४३
१३. महामंत्र के प्रताप से कामुकता जलकर राख हो गई.....................४५
कुल प्रसंग - ३
१४. महामंत्र के प्रताप से महारोग भी मिटे......................................४९
कुल प्रसंग - २
१५. महामंत्र के प्रताप से यमदूत भागे..५२
कुल प्रसंग - २
१६. स्वामिनारायण महामंत्र महात्म्य के कृपावचन.............................५५
१७. स्वामिनारायण महामंत्र जाप करने के कई तरीकें.........................५७

१ स्वामिनारायण संप्रदाय का प्रारंभिक परिचय

इस पवित्र भारतभूमि में उत्तरप्रदेश के अयोध्या निकट छपैया गांव है।

संवत १८३७, चैत्र शुक्लपक्ष नवमी (दि. ३ अप्रैल, १७८१) के दिन पिता धर्मदेव एवं माता भक्तिदेवी के यहां अनंतकोटि ब्रह्मांड के राजामहाराजाधिराज, अक्षरधाम के अधिपति, साक्षात् परब्रह्म पुरुषोत्तम महाप्रभु बाल घनश्याम प्रकट हुए। अपने स्वरूप की सर्वोपरी उपासना और अनादिमुक्त की स्थिति का प्रवर्तन करने के लिए इस ब्रह्मांड में दर्शन दिए। अनंत अवतारों और अनंत जीवों को अपने धाम की प्राप्ति कराने के लिए इंसानों को इंसान जैसे अवरभाव में दिखाई दिए।

बालसखा, परिवारजन एवं अपने मातापिता को बचपन में कई दिव्यचरित्र दिखाकर बहुत सुख दिया। कालिदत्त जैसे असुर का नाश किया। केवल आठ वर्ष की आयु में यज्ञोपवीत धर, सकल शास्त्रों का अभ्यास कम उम्र में ही कर लिया। ग्यारह वर्ष की कम उम्र में ही काशी में कई पंडितों की सभा में दिग्विजय किया। अपने मातापिता को अपने दिव्य स्वरूप की पहचान करवाकर, अपनी मूर्ति के सुख में उन्मुक्त किया। पर अब घनश्याम महाप्रभुजी जिस हेतु के लिए इस धरती पर आए थे, उसे पूरा करने के लिए तत्पर हुए थे। इसलिए संवत १८४९, अषाढ शुक्लपक्ष दसवी (दि. २९-०६-१७९२) के दिन उन्होंने गृहत्याग किया।

तेज बरसती बारिश में, शिशिर की प्रखर ठंड में तथा ग्रीष्म की तीव्र धूप

में भी एवं ठंड, धूप, बारिश, भूख, प्यास सब कुछ सहकर केवल कौपीन ग्रहण कर नंगे पांव चलकर हिमालय के सर्वोच्च शिखरों पर विचरण किया। पुलहाश्रम में भी छह माह रुककर कठिन तपश्चर्या कर सभी भक्तों को तपश्चर्या की रीत सिखाई। गोपालयोगी को अष्टांगयोग सिखाने की सेवा दी, उन्हें दिव्य गति प्रदान की और आगे भी नौ लाख योगीओं को नौ लाख रूप में दर्शन देकर उनकी उग्र तपश्चर्या का फल दिया एवं उनका आत्यंतिक कल्याण किया। अतः नदी, नाले, वन, पेड़-पौधे, पहाड, पशु-पंछी सब का कल्याण करते एवं अनंत तीर्थों को तीर्थत्व प्रदान करते नीलकंठ नाम से पहचाने जाने वाले यह वर्णी उत्तर, पूर्व और दक्षिण में तीर्थाटन करते करते गुजरात की सौराष्ट्र की भूमि पर बसे लोज नामक गांव में संवत १८५६, श्रावण कृष्णपक्ष छठ (दि. २१-०८-१७९९) के दिन आए। और यहां सद्‌गुरु मुक्तानंद स्वामी के संग गुरु रामानंद स्वामी के आश्रम में रहे। दस महिने के बाद गुरु रामानंद स्वामी का मिलन पीपलाणा नामक गांव में हुआ। वहां उन्होंने रामानंद स्वामी को गुरु बनाए। और संवत १८५७, कार्तिक शुक्लपक्ष प्रबोधिनी एकादशी (दि. २८-१०-१८००) के दिन महादीक्षा ग्रहण कर गुरु रामानंद स्वामी द्वारा सहजानंद स्वामी तथा नारायण मुनि नाम ग्रहण किए।

गुरु रामानंद स्वामी जिस वक्त का इंतजार कर रहे थे वह वक्त निकट आ रहा था। वह हमेशा अपने शिष्यों से कहते, 'हम तो सिर्फ डफली बजाने वाले हैं, सच्चा खेल खेलनेवाले तो अब आएंगे।' यह सच्चा खेल खेलने वाले मतलब कि सत्संग के धनी सहजानंद स्वामी अब आ चूके थे। इसलिए रामानंद स्वामी ने अपने तमाम त्यागी गृही शिष्य वर्ग को एकत्रित कर जेतपुर गांव में उन्नडखाचर के दरबार में धूमधाम से सं. १८५८, कार्तिक शुक्लपक्ष प्रबोधिनी एकादशी (दि. १७-११-१८०१) के शुभ दिन सहजानंद स्वामी को अपनी धर्मधूरा सौंपकर उनका पट्टाभिषेक किया। अपने ही हाथों से सहजानंद

स्वामी को वस्त्रालंकार पहनाकर उन्होंने ही आरती की एवं संतों-भक्तों को उद्‌बोधन कर कहा कि,

''मेरे प्यारे संत तथा देश-देश से आए प्यारे भक्तजन ! सब ध्यान से सुनें, यह सहजानंद स्वामी समर्थ, सर्वोपरी भगवान हैं । वह सभी कारण के कारण हैं । क्षर-अक्षर से परे हैं । अनंत ईश्वरकोटि, ब्रह्मकोटि तथा अक्षरकोटि को अपनी अन्वय शक्ति से धर रहे हैं । श्रीजीमहाराज इन सभी के अन्वय शक्ति द्वारा एवं व्यतिरेक स्वरुप के संबंधवाले सभी मुक्तों के व्यतिरेक संबंध से कारण, दाता, नियंता और स्वामी हैं । मेरे जैसे कई सेवक उनकी हरपल सेवा-प्रार्थना करते हैं । इसलिए उनकी महिमा जितनी आप समझ सकें, समझ लें । उनकी आज्ञा के मुताबिक रहें । वह कहे उस प्रकार उन्हें राजी करने की कोशिश करें । और मेहरबानी कर उनके प्रति कभी मनुष्यभाव मत रखिए ।''

अब रामानंद स्वामी, सहजानंद स्वामी के कार्य को आगे बढाना चाहते थे । इसलिए तुरंत थोडे ही दिनों में संवत १८५८, मागशर शुक्लपक्ष १३ (दि. १८-१२-१८०१, शुक्रवार) के दिन फणेणी नामक गांव में अपना अवतरण कार्य पूर्ण करके दिखाई देता अपना अवरभाव अदृश्य किया ।

२ स्वामिनारायण महामंत्र का प्रागट्य

गुरु श्री रामानंद स्वामी के अंतर्धान होने के बाद उनकी चौदहवीं का महा मंगलकारी दिन यानी सवंत १८५८, मगसिर कृष्णपक्ष एकादशी का दिन। (दि. ३१-१२-१८०१) सुबह में संत, भक्त, पाळा (सेवक), वर्णी सभी को विशाल सभा के रूप में एकत्रित किए और स्वयं गुरु रामानंद स्वामी ने दिया उच्च आसन ग्रहण कर सबको संबोधित किया :

"प्यारे संतों तथा सभी प्यारे हरिभक्त ! आप सब त्यागी, गृही, ब्रह्मचारी आदि सब अपने अपने धर्म में सावध रहें, इस में हम बहुत राजी है, पर... हे संतों, हे भक्तों ! आज तक सत्संग में सब अलग अलग नाम की माला जपते थे। लेकिन हम एक ही संप्रदाय के सभी भक्तों का भजन एक ही मंत्र से हो वही उचित्त है। तो आज हम एक ऐसे सर्वोपरी मंत्र का जयघोष करते हैं कि जो मंत्र नहीं, लेकिन महामंत्र होगा। उस मंत्र को अब आप ध्यान से सुनें और अब माला, भजन, धुन में भी इसी महामंत्र का जाप करें। अन्य कई मंत्र का जाप करें, पर इस महामंत्र की तुलना में वह नहीं आ सकते। तो यह है सर्वोपरी महामंत्र, सुनो... हे प्यारे भक्तजन, सुनो..."

"वळी व्हाले करी एक वात, सहु सांभळो जन साक्षात्;
अमारां नाम छे जो अपार, तेमां पण कर्यो निरधार।
मार्कंड ऋषिए ते जेह, नाम पाड्यां छे अमारां तेह;
कृष्ण, हरि, हरिकृष्ण सार, नीलकंठ नाम निरधार।
वळी स्वामी रामानंदे जेह, नाम पाड्यां छे अमारां अेह;

सहजानंद सुखनुं धाम, बीजुं नारायण मुनि नाम ।
रूडुं घनश्याम नाम जेह, मातापिता कहेतां करी स्नेह;
अेम नाम अमारां ते बहु, पाड्यां नोखां नोखां जने सहु ।
पण मुख्य अमारुं जे नाम, ते तो भूली गया छे तमाम;
कोईने हाथ ते आव्युं नहि, एह सारुं नाम गयुं रही ।''

''हे प्यारे भक्तजन, आज तक हमारे कई नाम रखे गए हैं। जैसे कि, छोटे थे तब बचपन में धर्मपिता के घर आए मार्कंड ऋषि ने हमारा नामकरण करते कहा था कि, 'यह सब के चित्त को आकर्षित करेंगे, इसलिए इनका नाम '**कृष्ण**' रखो । साथ ही सबकी वृत्तिओं को वह अपने स्वरूप में हर लेंगे, इसलिए '**हरि**' रखो । यह दोनों गुन एक हो जाने से 'हरिकृष्ण' बनता है, इसलिए इनका नाम '**हरिकृष्ण**' रखो। उनका जीवन तप, त्याग एवं वैराग्यमय होगा, इसलिए '**नीलकंठ**' नाम रखो। हालांकि बचपन में हमारे बालसखा एवं मातापिता हमें '**घनश्याम**' कहकर बुलाते थे । गुरु रामानंद स्वामी नें हमारी '**सहजानंद**' तथा '**नारायण मुनि**' के नाम से पहचान दी। पर हमारा मुख्य एवं सर्वोपरी नाम अब तक किसी के हाथ में नहीं आया। जो हम आज प्रकाशित करते हैं, तो आप सब एकाग्र चित्त से इसे सुनिए।''

''हवे आज करुं हुं प्रकाश, तमे सांभळो ते सहु दास;
स्वामिनारायण मारुं नाम, संभारता सौने सुखधाम ।
बीजा नाम ले कोई अपार, तोये आवे नहि अेनी हार;
स्वामिनारायण नाम सार, लीये एक वार निरधार ।
तेने अपार नामनुं फळ, मळे तरत जाणो ए पळ;
माटे सौ जन लेजो विचारी, आ छे नाम अति सुखकारी ।''

– पुरुषोत्तम लीलामृत सुखसागर : तरंग – १३

अर्थात् हे संतो, हे भक्तों...

नारायण नाम तो कई हैं, सभी नारायणमात्र के अन्वय शक्ति से हम स्वामी हैं, एवं नियंता हैं । इसलिए हमारा सही नाम '**स्वामिनारायण**' है । आज से आप सभी इसी नाम का भजन एवं जाप करें ।

तथापि हे प्यारे भक्तो...

'स्वा... मि... ना... रा... य... ण...' इस षडाक्षरी महामंत्र का ऐसा प्रौढ प्रताप है कि,

अन्य कई हजारों नाम जपें और स्वामिनारायण महामंत्र का एक बार जाप करें तो भी वह इसकी तुलना में नहीं आ सकते । तथापि किसी भी प्रकार का संकट तथा दुःख एवं आपत्ति आ पडी हो तो इस महामंत्र का जप करने से सभी दुःखों का नाश होगा । साथ ही किसी भी भूतप्रेतादि का उपद्रव हो तब भी इस मंत्र के जरिये आसुरी शक्ति को जलाकर राख किया जा सकता है । इस मंत्र का जाप करने वाले को यमराज का बुलावा नहीं आएगा । इतना ही नहीं, पर सभी पापों का नाशकारी यही महामंत्र हैं । तो सुनो... हे भक्तजनों सुनो... !

"जे स्वामिनारायण नाम लेशे, तेनां बधां पातक बाळी देशे;
छे नाम मारां श्रुतिमां अनेक, सर्वोपरी आज गणाय एक ।
जो स्वामिनारायण एक वार, रटे बीजां नाम रट्यां अपार;
जप्या थकी जे फळ थाय तेनुं, करी शके वर्णन कोण एनुं ।
षडाक्षरी मंत्र महासमर्थ, जेथी थशे सिद्ध समस्त अर्थ;
सुखी करे संकट सर्व कापे, छते देहे मूर्तिधाम आपे ।
बीजा सौथी अनंतगणो विशेष, जाणे नहि जेनो महिमा अक्षरेश;
ज्यां ज्यां महामुक्त जनो वसाय, आ कालमां तो जप ए ज थाय ।
जो अंतकाळे श्रवणे सुणाय, पापी घणो ते पण मोक्ष थाय;
ते मंत्रथी भूतपिशाच भागे, ते मंत्रथी तो सद्बुद्धि जागे ।
ते मंत्र जेना मुखथी जपाय, तेना थकी तो जम नासी जाय;

श्री स्वामिनारायण जे कहेशे, भावे कुभावे पण मुक्ति लेशे ।
षडाक्षरो छे षट्शास्त्र सार, ते तो उतारे भवसिंधु पार;
छये ऋतुमां दिवसे निशाये, सर्वे क्रियामां समरो सदाये ।
पवित्र देहे अपवित्र देहे, ते नाम नित्य स्मरवुं सनेहे;
जळे करीने तनमेल जाय, आ नामथी अंतर शुद्ध थाय ।
जेणे महापाप कर्यां अनंत, जेणे पीड्यां ब्राह्मण धेनु संत;
ते स्वामिनारायण नाम लेता, लाजी मरे छे मुखथी कहेता ।
श्री स्वामिनारायण नाम सार, छे पापने ते प्रजळावनार;
पापी घणुं अंतर होय जेनुं, बळ्या विना केम रहे ज तेनुं ?"

– (श्री हरिलीलामृतम् : कलश – ५, विश्राम – ३)

तथापि, यही महा मंगलकारी दिन एक अद्‌भुत चमत्कार हुआ...

३ शीतलदास में से हुए

सद्. व्यापकानंद स्वामी

झरणां-परणां गांव के शीतलदास नामक वैरागी रामानंद स्वामी का प्रभाव सुन उनके दर्शन हेतु फणेणी नामक गांव आए। वहां उन्होंने सुना कि स्वामि तो इस लोक से अंतर्धान हो गए। इसलिए उन्होंने वहां से निकलने की तैयारी की, तभी सहजानंद स्वामी ने कहा कि, ''हे शीतलदास ! आज जाने के लिए इतने उतावले क्यों हो रहे हो ?''

तभी शीतलदास ने कहा कि, ''हे सहजानंद स्वामी ! मैंने सुना है कि भगवान का अवतार रामानंद स्वामी के रूप में हुआ है। इसलिए उनके दर्शन हेतु मैं यहां आया था। किन्तु वह तो इस लोक में से अंतर्धान हो गए हैं। इसलिए अब मैं अन्य तीर्थों में जाकर प्रभु की खोज करूंगा।''

यह सुनकर भगवान स्वामिनारायण बोले, ''हे शीतलदास ! धैर्य रखो, अधीर न हो। आपको गुरु रामानंद स्वामी के दर्शन ही करने हैं न ? आइए, हमारे सामने बैठिए और इस महामंत्र का जाप करें : 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...'''

हे शीतलदास ! हमने अभी थोडी देर पहले ही कहा कि,

''षडक्षरी मंत्र महासमर्थ, जेथी थशे सिद्ध समस्त अर्थ;
सुखी करे संकट सर्व कापे, छते देहे मूर्तिधाम आपे ।''

तो हे शीतलदासजी ! आप इस महामंत्र का जाप एकाग्रता से नेत्र बंद कर करें। आप को गुरुवर्य रामानंद स्वामी के दर्शन अवश्य होंगे।

महाप्रभु का आदेश सुनते ही शीतलदास ने एकाग्र चित्त से 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' महामंत्र का जाप शुरु किया। और तत्काल ही महाप्रभु की

कृपा से शीतलदास को हो गई समाधि। समाधि में महाप्रभु ने उसे मूर्तिधाम के दिव्य दर्शन करवाएं। वहां उन्होंने क्या देखा ?

जो महाप्रभु भगवान स्वामिनारायण के दर्शन उन्होंने फणेणी गांव में किए थे, उसी दिव्य तेज वाले महाप्रभु के दर्शन उन्होंने यहां किए। दिव्य महाराज की एक ओर अनंत ऐश्वर्यार्थी महाप्रभु की स्तुति करते हाथ जोड़कर खड़े दिखाई दिए। और दूसरी ओर रामानंद स्वामी आदि अनंत मुक्त भी महाप्रभु को स्तुति कर खड़े थे।

तभी श्रीजीमहाराज ने कहा, ''आइए... आइए... शीतलदासजी ! लो चंदन और करो हमारी पूजा।'' जैसे ही शीतलदास महाप्रभु की पूजा करने गए कि श्रीजीमहाराज बोले, ''शीतलदास ! देखो, केवल हमारी अकेले की नहीं, पर इस अनंत मुक्तों की पूजा भी एक साथ करें।''

''अरे महाराज ! एक साथ इतने सारे स्वरूपों का पूजन तो कैसे हो सकता है ?'' हाथ जोड़ शीतलदास ने महाराज से कहा।

तभी श्रीजीमहाराजने कहा कि, ''हे शीतलदास ! आप एक संकल्प कीजिए कि यदि रामानंद स्वामी जो पुरुषोत्तमनारायण हो तो मेरे अनंत रूप हों और मैं एक साथ इन सभी मुक्तों की पूजा कर सकूं।''

और शीतलदास ने कहा, ''हे रामानंद स्वामी ! यदि आप सर्वोपरी भगवान हैं तो मेरे अनंत रूप हो जाएं और एक साथ मैं सभी की पूजा कर सकूं।''

पर... पर... निरर्थक... शीतलदास का संकल्प पूर्ण न हुआ।

तभी श्रीजीमहाराज ने फिर से कहा कि, ''हे शीतलदास ! अब ऐसा संकल्प कीजिए कि, इस अनंत ऐश्वर्यार्थी में से यदि कोई सर्वोपरी भगवान हो तो मेरे अनंत रूप हों और मैं एक साथ इन सभी की पूजा कर सकूं।''

शीतलदास ने तुरंत ही उसी मुताबिक संकल्प किया। पर उसमें भी उन्हें सफलता न मिली। फिर महाप्रभु ने कहा कि, ''अब ऐसा संकल्प कीजिए कि,

यदि सहजानंद स्वामी सर्वोपरी भगवान हो तो मेरे अनंत रूप हो जाएं।" और ऐसा संकल्प करने के साथ ही शीतलदास के अनंत रूप हुए और उन्होंने एक साथ ही अनंत मुक्तों की पूजा की।

"शीतळदासे धारियुं, स्वामी आ छे सहजानंद;
ते पुरुषोत्तम होय तो, मारां थाय स्वरूपनां वृंद ।
ते समे शीतळदासनां, त्यां तो रूप थयां अगणित;
अनंत मुक्तनी एक क्षणमां, पूजा करी धरी प्रीत ।"
(श्रीहरिलीलामृतम् : कलश-५, विश्राम-३)

अनंत मुक्तों के साथ शीतलदास ने रामानंद स्वामी की पूजा भी की और कहा कि, "हे रामानंद स्वामी, मैं तो आपको प्रभु जानकर आपके दर्शन हेतु आया था।"

तभी रामानंद स्वामी बोले,

"सुणी बोल्या रामानंद स्वामी, भगवान तो अक्षरधामी;
तमे जोया फणेणीमां जेह, जुओ आ दिसे प्रत्यक्ष एह,
सर्व अवतारना अवतारी, सर्वोपरी विश्वविहारी;
हुं तो छुं एना दासनो दास, सजुं सेवा रही प्रभु पास ।"

ऐसा दिव्य आश्चर्य देख शीतलदास ने महाप्रभु को सर्वोपरी भगवान जाना और जहां समाधि दूर हुई वहां मानव रूप से फणेणी में सभा के बीच बैठे सहजानंद स्वामी को साष्टांग दंडवत किए और फिर सभी सभाजनों से कहा कि, "हे संतो-भक्तों, यह सहजानंद स्वामी, स्वामिनारायण भगवान ही सर्वोपरी भगवान है, गुरु रामानंद स्वामी नहीं।"

शीतलदास के ऐसे वचन सुनकर सभी सभाजन महाप्रभु को प्रार्थना करने लगे, "हे सहजानंद स्वामी ! हमें भी समाधि में आपके, अक्षरधाम के और गुरु रामानंद स्वामी के दर्शन करवाइए।"

महाप्रभु श्रीहरि ने सबसे 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' की धून

शुरू करवाई और तुरंत ही सबको समाधि हो गई। समाधि में जैसे शीतलदास ने रामानंद स्वामी को सहजानंद स्वामी की स्तुति एवं सेवा करते देखा था, सभी को ऐसे ही दर्शन हुए। समाधि में से बाहर आने के बाद सब महाप्रभु को सर्वोपरी भगवान समझकर उसी दिन से स्वामिनारायण महामंत्र का जाप करने लगे।

उसके बाद उसी दिन शीतलदास ने महाराज से प्रार्थना की, "हे प्रभु! अब मुझे आप अपना साधु बनाइए।" और आज ही धर्मधुरा संभालने के बाद महाप्रभु ने अपने दिव्य कर कमलों से शीतलदास को सब से पहले दीक्षा दी।

जो शीतलदास से अब हुए स्वामी व्यापकानंद।

इस तरह यह मंगलकारी दिन से...

१. अपने सर्वोपरी 'स्वामिनारायण' मंत्र का जाप शुरू हुआ।
२. संप्रदाय 'स्वामिनारायण' के नाम से पहचाना गया। अर्थात् 'स्वामिनारायण' नामक संप्रदाय का प्रागट्य आज के दिन हुआ।
३. महाप्रभु ने अपने सर्वोपरी स्वरूप की पहचान करवाने की शुरुआत आज ही के दिन से की।
४. पहली बार सहजानंद स्वामी ने धर्मधुरा संभालकर विशाल सभा को पहली बार आज ही के दिन उद्बोधित की।
५. 'स्वामिनारायण' महामंत्र से समाधि प्रकरण का आरंभ आज ही के दिन से हुआ।
६. धर्मधुरा संभालने के बाद सबसे पहले दीक्षा देने का प्रारंभ भी आज ही के दिन से किया।

ऐसे आज के इस महा मंगलकारी दिन को धन्य हो... धन्य हो... !

सभी संत-भक्त महाप्रभु के इस सर्वोपरी महामंत्र के उद्घोष से बहुत ही आनंदित हुए, क्योंकि पहले किसी ने भी स्वयं ही अपना नाम नहीं रखा था।

जबकि सभी कारण के कारण स्वरूप ने तो यह महामंत्र अपने ही मुखकमल से प्रकाशित कर दिया। इसी बात की खुशी सब के चेहरे पर थी। इसीलिए कहा गया है कि,

स्वस्वामिनारायणनाम मंत्रम् स्वयं दिशन्तम् भवपारयंत्रम् ।
प्रौढ प्रतापाश्रितलोकतंत्रम् श्री स्वामिनारायणमानमामि ।।

अर्थात्,

संसार से उद्धार करने वाले, 'स्वामिनारायण' मंत्र को अपने मुखकमल से प्रकाशित करने वाले एवं अपने प्रौढ तेज से समस्त लोक को आश्रय देने वाले श्री स्वामिनारायण भगवान को मैं नमस्कार करता हूं।

४ वचनामृत के आधार से महामंत्र की महिमा

ऐसे अद्‌भुत महामंत्र का महात्म्य श्रीजीमहाराज ने वचनामृत ग्रंथ में भी कहा है।

१. गढ़डा प्रथम का ५६ वां वचनामृत : ''चाहे किसी भी प्रकार का पापी जीव हो, पर अंत समय यदि वह स्वामिनारायण का नाम लें तो वह सर्व पापों से मुक्त होकर ब्रह्ममहल में निवास करता है। ऐसा भगवान का बड़ा प्रताप है। इसलिए भगवान का बल रखना चाहिए।''

२. लोया का ६ वां वचनामृत : स्वयं श्रीजीमहाराज ने यहां प्रश्न किया है कि, ''यदि भगवान का ध्यान करते वक्त बुरे विचार आए तो क्या करें ?'' इसका उत्तर उन्होंने खुद ही दिया है, ''जब ऐसे बुरे विचार मन में आने लगे तब ध्यान छोड़कर अपने मुख से ऊंचे स्वर से निर्लज होकर ताली बजाकर स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... भजन करें। तथा हे दीनबंधु ! हे दयासिंधो ! इस प्रकार भगवान की प्रार्थना करें एवं प्रभु के संत, जो सद्. मुक्तानंद स्वामी जैसे महान हो उनका नाम लेकर उनकी प्रार्थना करें।''

३. जेतलपुर का तीसरा वचनामृत : ''दुष्ट वासना को दूर करने का उपाय यह है कि, जब वर्तमान (नियम) से बाहर संकल्प हो एवं किसी हरिभक्त या संत के अभाव का संकल्प हो, तब 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण' ऐसी पुकार कर बार बार नाम रटते रहें।''

५ सद्. गुणातीतानंद स्वामी की बातों में महामंत्र की महिमा

१. प्रकरण-१, १५४ वीं बात : "स्वामिनारायण के मंत्र जैसा बलवान मंत्र और कोई नहीं है। इस मंत्र से काले जहरीले सांप का विष भी उतर जाता है। इस मंत्र से जीव ब्रह्मरूप हो जाता है एवं काल, कर्म और माया का बंधन छूट जाता है। यह मंत्र ऐसा बलवान है। इसलिए निरंतर इसकी स्तुति करते रहें।"

२. प्रकरण-१, २७२ वीं बात : "यदि कोई उलझन आए तो क्या करें ? 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' का जाप करें, जिस से उलझन दूर हो जाएगी।"

आइए, हम भी इस महामंत्र का अखंड जाप करने की आदत डालें। जिससे,

१. अंतर की मलिन वासनाओं का नाश होता है।

२. इन्द्रियां एवं अंतःकरण पाप रहित शुद्ध एवं पवित्र हो जाते है।

३. किसी के भी अभाव एवं अवगुणों से बचा जा सकें।

४. किसी भी प्रकार के विघ्न या संकट आए तो उससे महाराज हमारी रक्षा करते हैं।

५. हृदय निर्मल एवं कोमल बनता है, जिससे प्रभु के ध्यान-भजन का अधिक सुख मिलता है।

ऐसा पाप नाशकारी एवं सुखदायी नाम जितना ज्यादा लेंगे उतना ज्यादा फायदा होगा, नुकसान तो होगा ही नहीं।

इस सर्वोपरी स्वामिनारायण महामंत्र के कारण कैसे कैसे अद्भुत चमत्कार हुए हैं। वह हम आगे जानेंगे।

६ महामंत्र के प्रताप से निर्जन हुई यमपुरी

एक बार महाप्रभु श्री स्वामिनारायण भगवान कालवाणी नामक गांव में संतों-भक्तों की सभा भरकर बिराजमान थे। तभी भीमभाई नामक एक भक्त ने महाप्रभु से प्रार्थना की कि, ''हे महाराज ! यदि इस लोक में किसी भी राजा का राज्याभिषेक हो तो सारे केदियों को मुक्त कर दिया जाता है। आप तो अक्षरधाम के अधिपति हैं। आपका पट्टाभिषेक हुआ और आप गादी पर बिराजमान हुए, तो क्या आप कोई संत को यमपुरी भेजकर वहां पीड़ित बेचारे अनंत जीवों को छुड़वा नहीं सकते ? दयालु, आप तो महासमर्थ है। इसलिए यमपुरी में पीड़ा सहते सभी जीवों पर दया कीजिए। प्रभु...! दया कीजिए।''

तभी इस प्रेमीभक्त की प्रार्थना सुन श्रीजीमहाराज ने सद्. श्री स्वरूपानंद स्वामी को आदेश दिया कि, ''हे स्वामी ! आप समाधि धर यमपुरी जाएं और वहां जाकर हमारे इस स्वामिनारायण महामंत्र के जाप से नर्ककुंड में पीड़ा भुगत रहे सभी जीवों को बाहर निकालकर धाम में भेज दें।''

ऐसा कहकर स्वामी को अपने सामने बिठाकर 'स्वामिनारायण' महामंत्र की धुन करवाई। इसी दौरान सद्. स्वरूपानंद स्वामी को समाधि हो गई। समाधि में डूबने के साथ ही स्वरूपानंद स्वामी महाराज की आज्ञा के मुताबिक 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' महामंत्र से यमपुरी में अनंत पीड़ा भुगत रहे सभी जीवों को यमपुरी में से मुक्ति दिलाकर धाम में भेजकर वापिस आए और समाधि में से उठने के बाद यह बात सब को बतलाई।

महाप्रभु श्रीहरि यह बात सुन अत्यंत प्रसन्न हुए।

वाह प्रभु वाह ! अनंत है आपके इस अलौकिक महामंत्र के अलौकिक चमत्कार !

७ महामंत्र के प्रताप से

हुआ चारों ओर प्रकाश... प्रकाश...

एक बार महाप्रभु भगवान स्वामिनारायण, गढपुर में सभा भरकर बिराजमान थे। तभी श्री नृसिंहानंद स्वामी ने कहा कि,

“हे महाराज ! मैं इस सत्संग में आया उससे पहले परोक्ष के मंदिर में पूजारी के रूप में सेवा करता था। इसी बीच एक दिन एक बैरागी आकर मुझसे कहने लगे कि, अभी गुजरात के सौराष्ट्र प्रांत में स्वामिनारायण नामक भगवान विचरण कर रहे हैं। ऐसी बात करते वक्त जब भी ‘स्वामिनारायण’ शब्द आता तब पूरे मंदिर में चारों ओर प्रकाश... प्रकाश... हो जाता था।

दो-तीन बार ऐसा सुनने के बाद तथा ऐसा देखने के बाद मुझे लगा कि जिसका केवल नाम लेने से ही इतना प्रकाश होता है तो वह स्वयं भगवान कैसे होंगे ? ऐसा महात्म्य समझकर हे दयालु ! मैं वहां से निकल गया और खोज करते करते आखिर में आपसे यहां मुलाकात हुई। हे दयालु ! आज मुझे समझ में आ रहा है कि आपने मुझ पर कितनी बड़ी कृपा की है।”

८ महामंत्र के प्रताप स

मुर्दे भी खड़े हुए...

प्रसंग-१ : झींझावदर नामक एक गांव था। अलैयाखाचर यहां के बड़े भक्त थे। जिनके घर एक बार श्रीजीमहाराज पधारे थे। उन्होंने महाराज, संतों एवं भक्तों की अनन्य सेवा की थी। महाराज ने अत्यंत प्रसन्न होकर आशीर्वाद दे दिया की, ''हे अलैयाखाचर ! तुम्हारे इस मकान में जिस किसी की भी मृत्यु होगी, उसे हम हमारे अक्षरधाम ले जाएंगे।''

अलैयाखाचर को महाप्रभु के इस वचन पर पूर्ण भरोसा था कि महाराज के आशीर्वाद कभी झूठे नहीं हो सकते। इसी बीच एक बार अलैयाखाचर का एक नौकर 'जेहला' बहुत बीमार हो गया। बीमारी बढ़ जाने के कारण महाप्रभु ने उसे अपने धाम में बुला लिया।

अलैयाखाचर ने 'जेहला' के अग्निसंस्कार की तैयारी करवाई और उनके जीर्ण देह को स्मशान ले जाया गया। पर... पर... अलैयाखाचर के चाचा कुसंगी थे। वह यात्रा से घर आने के साथ ही 'जेहला' की मृत्यु की खबर सुनते सीधे ही घोडे पर सवार हो स्मशान पर आए। और ''ठहरिए... ठहरिए... रुक जाइए...'' इतना बोलकर अलैयाखाचर को कहने लगे, ''मुझे प्रतीति करवाएं कि आपके स्वामिनारायण भगवान के आशीर्वाद के मुताबिक मृत्यु के बाद यह 'जेहला' अक्षरधाम में गया हैं।'' ऐसा कहकर उन्होंने स्मशान में अग्निसंस्कार विधि रुकवाई।''

तैयार की गई चिता के पास आकर नीडर होकर अलैयाखाचर बोले, ''चाचा, यह मृत जेहला खुद उठकर आपको यह कहे कि श्रीजीमहाराज मुझे अक्षरधाम में ले गए हें, तो क्या आप स्वामिनारायण की कंठी पहनकर सत्संगी होंगे ?''

चाचा बोले, ''हां अलैयाखाचर ! मुझे यह शर्त मंजूर है, पर यदि जेहला चिता से उठकर नहीं बोलेगा तो... तो क्या ?''

''तो चाचा, इस जेहला की चिता के साथ मैं भी जल जाने के लिए तैयार हूं ।''

ऐसी कठिन प्रतिज्ञा लेकर महाराज को प्रार्थना कर अलैयाखाचर तो पहुंचे जेहला के मृत शरीर के पास । जैसे ही उन्होंने जेहला के मृत शरीर के कर्ण में तीन बार 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' नामक महामंत्र का जाप किया कि तुरंत... अहोहो... यह क्या ? कैसा चमत्कार हुआ ! स्मशान में आए सैकडो इंसानो की आंखों के सामने मृत जेहला का शरीर चिता पर हिला । जेहला अंगडाई लेकर आंखे खोलकर खडा हो गया और बोला, ''हे अलैयाखाचर ! आपने मुझे यहां क्यों बुलाया ? मैं तो दिव्य तेज के अंबार सम अक्षरधाम में महाप्रभु का अलौकिक सुख भुगत रहा था । इसी बीच आपकी कठिन प्रतिज्ञा सुन महाराज ने मुझे यहां कहने के लिए भेजा है । इसलिए कोई संकल्प मत करना । मैं अक्षरधाम में ही हूं । चलिए... जय स्वामिनारायण...'' इतना कहकर फिर से जेहला ने सदा के लिए अपनी आंखें बंद कर ली ।

वाह प्रभु वाह ! इस स्वामिनारायण महामंत्र के कारण अक्षरधाम पहुंचने की प्रतीति हुई ।

प्रसंग-२ : गढपुर के पास बोटाद नामक गांव है । समर्थ सद्. व्यापकानंद स्वामी विचरण करते करते यहां आए थे । उस वक्त गांव में मंदिर नहीं था । इसलिए सभी संत गांव के मुखिया दाहाखाचर के यहां ठहरते । जब स्वामी

दाहाखाचर के दरबार में पहुंचे तब उन्होंने दाहाखाचर को हृदय कांप उठे ऐसा रुदन करते देखा। स्वामी ने इस कल्पांत का कारण पूछा तो पता चला कि दाहाखाचर को पुत्र से भी अधिक प्यारी उनकी घोडी का निधन हुआ था। इसलिए वह इस तरह आक्रंद कर रहे थे।स्वामी अत्यंत दयालु थे। इसलिए वह सहज भाव से बोले, ''सब लोग दूर हट जाईए। कहां है घोडी ? लाइए, मुजे देखने दीजिए।'' ऐसा कहकर स्वामी मृत घोडी के पास जाकर बैठ गए और महाराज को प्रार्थना की तथा घोडी के कर्ण के पास मूंह रखकर 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' ऐसा तीन बार महामंत्र का जाप किया कि अचानक घोडी हिनहिनाकर खडी हुई।

यह चमत्कार स्वामिनारायण महामंत्र का था। श्रद्धा और विश्वास के साथ किया गया जाप मुर्दे को भी खडा कर देता है।

प्रसंग-३ : एक बार सद्. व्यापकानंद स्वामी सत्संग करवाने हेतु बुंदेलखंड पहुंचे। स्वामी और अन्य संत एक गांव के बाहर पैड के नीचे बैठकर महाप्रभु का भजन कर रहे थे। तभी गांव के एक मुमुक्षु ब्राह्मिन वहां आकर सभी को प्रणाम कर बैठ गए। ऐसे प्रभुपरायण संतों को देखकर उनके मन में बहुत भाव हुआ और वह बोले, ''हे संतो ! आप जैसे संतों को मेरे घर भोजन करवाने का मेरा संकल्प है। मैं इस गांव का ब्राह्मिन हूं। तो कृपया आप मेरे इस संकल्प को पूरा कीजिए।''

इस विप्र की बिनती सुन सद्. व्यापकानंद स्वामी एवं अन्य संत गांव में विप्र के घर आए। बहुत भाव से, पवित्रता से भोजन बनाकर संतों को भोजन के लिए बिठाया। पर उसी वक्त ब्राह्मिन के घर एक अघटित घटना हुई। ब्राह्मिन का एक ही पुत्र था, जो बहुत ही बीमार था। उसी वक्त उसने अपने प्राण त्याग दिए। अर्थात् उसी वक्त उसकी मृत्यु हो गई। ब्राह्मिन गहरे शोक में डूब गए। एक ओर पुत्र वियोग का दुःख था, दूसरी ओर धर्मसंकट था। अब क्या करें ?

क्योंकि पुत्र के अवसान से घर में सूतक लगता है। इसलिए घर में पवित्र संतों को भोजन नहीं दिया जा सकता। और यदि उस संतों को यह बात बता दि जाए तो वह उनके आंगन से बिना कुछ खाए भूखे ही चले जाएंगे, तो भी दोष लगेगा।

फिर भी उलझन में फसें इस दीन-हीन ब्राह्मिन ने संतों के पास आकर प्रार्थना की, "हे संतों ! मैं बहुत ही बदकिस्मत हूं। क्योंकि कई दिनों से आप जैसे पवित्र संतों को भोजन करवाने की मेरी इच्छा थी, जो आज पूरी हुई। आपने मुझ पर कृपा की और आप सब मेरे घर भोजन के लिए आए। बड़े भाव से मैंने खाना बनाया और आपको भोजन के लिए बिठाया, पर अभी इसी वक्त मेरे पुत्र की मृत्यु हुई है। इसलिए मैं बहुत बड़ी उलझन में हूं कि मैं क्यां करूं ? क्योंकि यदि मैं आपको यह बात न बताऊं तो सूतक दोष लगे और यदि बात बताऊं और आप सब भूखे चले जाएं तो भी दोष लगे। इसलिए हे दयालु संतों, आप ही इस में से कोई रास्ता निकालें।"

यह सुनकर अत्यंत दयालु श्री सद्. व्यापकानंद स्वामी बोले, "भूदेव, चिंतित न हो; जाईए, अंदर जाकर मृत पुत्र के पास बैठकर 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' इस महामंत्र का भजन करें, प्रभु अवश्य कृपा करेंगे।"

इस विश्वासु एवं श्रद्धावान निर्दोष विप्र ने अंदर जाकर जैसे ही एकाग्र चित्त से थोड़ी देर के लिए स्वामिनारायण महामंत्र का जाप किया कि एकाएक चमत्कार हुआ। जैसे नींद से बच्चा जगे, वैसे ही अंगड़ाई लेकर यह बालक बैठ खड़ा हुआ।

उसके बाद यह विप्र एवं उनके पुत्र तथा पत्नी सभी सत्संगी हुए। इस प्रसंग का निर्देश सद्. निष्कुळानंद स्वामी ने भक्तचिंतामणि ग्रंथ के १३० वें प्रकरण में किया है।

प्रसंग-४ : वांकानेर के जीवराम सेठ स्वयं श्रीजीमहाराज के अनन्य आश्रित थे। उनका व्यापार बहुत बड़ा था। देश-परदेश से माल की बड़ी बड़ी जहाज ले आते थे और उसे बेचते और शांति से प्रभु की भक्ति करते थे।

एक बार जीवराम सेठ सिंध देश में से चावल की बड़ी खरीदी कर, जहाज भरकर हिन्दुस्तान आ रहे थे। इसी बीच रास्ते में समंदर के लुटेरों ने जहाज पर लूट चलाई। जहाज के मल्लाह तो अपनी जान बचाकर भाग गए, पर लुटेरों ने जीवराम सेठ को पकड़कर उनके हाथ-पैर बांधकर, पूरे शरीर पर छुरे से प्रहार करके उन्हें समंदर में फेंक दिया। और पूरा जहाज लूट लिया।

सभी मल्लाहों ने यह दृश्य अपनी आंखों से देखा था, इसलिए वांकानेर जीवराम सेठ के यहां यह खबर पहुंचाई कि लुटेरों के हाथ जीवराम सेठ की मृत्यु हुई है। यह खबर सुन घर में और पूरे गांव में शोरगुल मच गया। सब करुण भाव से आक्रंद करने लगे। उनके समाज के कई लोग इकट्ठे हुए और जीवराम सेठ की पत्नी के पास चुडाकर्म करवाने लगे। तभी भगवान स्वामिनारायण में अत्यंत निष्ठा रखने वाले एवं प्रभु में प्रतीति रखने वाले जीवराम सेठ के बूढ़े मातुश्री ने कहा, "भाईओं, आप सब भरोसा रखो; मेरा बेटा जीवराम भगवान स्वामिनारायण का आश्रित है, वह इस तरह मर ही नहीं सकता। प्रभु जरूर उसकी रक्षा करेंगे। आप केवल दो दिन तक इंतजार कीजिए। मेरा बेटा जरूर स्वस्थ रूप में वापिस आएगा। मुझे अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण की धुन करनी है, आप उसमें मुझे मदद कीजिए।"

गांव के लोग एवं बुजुर्गों ने धैर्य रखकर इस बूढ़िया की बात पर भरोसा कर स्वामिनारायण महामंत्र की धुन शुरू की। बूढ़िया के मन में तो बहुत ही श्रद्धा और भरोसा था ही।

दूसरी ओर समंदर में फेंकेजाने वाले जीवराम सेठ समंदर किनारे आकर बेहोश पड़े थे। तभी अत्यंत दयालु भगवान स्वामिनारायण ने जीवराम सेठ को

दर्शन देकर उनके पूरे शरीर पर जहां जहां पर घाव लगे थे, वहां स्पर्श किया, और उनके घाव भरें। तुरंत उनको उनके घर भेजा। स्वामिनारायण महामंत्र की धुन चल रही थी। उसी वक्त जीवराम सेठ को घर आते देख सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ। घर पहुंचकर उन्होंने जो हुआ था वह सब कुछ बतलाया।

सभी को स्वामिनारायण महामंत्र एवं भगवान स्वामिनारायण का महात्म्य समझ में आया और सभी सत्संगी हुए।

वाह प्रभु, वाह !

प्रसंग-५ : मध्यप्रदेश में ग्वालियर के पास बामरोली नामक एक छोटे से गांव की यह बात है। इसी गांव गिरधारी नामक श्रीहरि के भक्त एक बार अपनी युवान पत्नी के साथ अपने ससुराल गए थे। वहां से वापिस आ रहे थे। उस वक्त बस या रोड की सुविधाएं नहीं थी। इसलिए यह दोनों प्रभु स्मरण के साथ अपना रास्ता काट रहे थे। रात हो जाने से किसी एक गांव के किसी रजपूत के यहां उन्होंने रात्री निवास किया। और सुबह पहले उठकर प्रातःकाल में ज्यादा चल पाएंगे ऐसे इरादे से उन्होंने अपना रास्ता काटना शूरू किया। उन्होंने सोचा कि रास्ते में आगे नदी आएगी, वहां स्नान पूजा करके साथ में लाया हुआ भोजन कर लेंगे। ऐसा सोचकर आगे चले। आगे चलते चलते रास्ते में एक नदी आई। उसके निर्मल जल में उन्होंने स्नान किया और नदी के किनारे पर आए एक मंदिर के चबूतरें पर बैठकर पति-पत्नी ने महाप्रभु की पूजा की।

दूसरी ओर जिस रजपूत के यहां उन्होंने रात बिताई थी, उस रजपूत की नजर इस गिरधारी की युवान पत्नी को देख विकृत हुई। इसलिए उसने कामातुर होकर घोडा लेकर इस दंपती का पीछा किया। पीछा करते करते वह, जहां यह दोनों पूजा कर रहे थे, वहां तक आ गया। आते ही उसने गिरधारी के दांई ओर एक भाला घुसेड़कर उसे मार दिया। भक्तराज तो वहीं पर गिर पड़े। पर

उनकी पत्नी वक्त पहचानकर, दौड़कर मंदिर में चले गए और मंदिर के द्वार बंध कर दिए। वह भगवान स्वामिनारायण को प्रार्थना और महामंत्र की धुन करने लगे। "स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... रक्षा करो रक्षा करो।" थोड़ी देर ऐसे कल्पांत के साथ धुन करने के साथ ही भक्तरक्षक भगवान श्रीहरि माणकी घोडी पर सवार होकर वहां पधारें। कामातुर हुए रजपूत को पाषाणवत् कर दिया और इस महिला को निर्भय कर मंदिर से बाहर निकाला और कहा, "बहन, गभराइए मत, गिरधारीजी को कुछ नहीं हुआ है। उनके देह पर वस्त्र ढंक दे और उनके पास बैठकर पांच माला तथा पांच प्रदक्षिणा करें। सब ठीक हो जाएगा।" इतना कहकर महाप्रभु अदृश्य हो गए।

जैसे महाराज ने कहा था उसी मुताबिक इस औरत ने पांच माला एवं पांच बार प्रदक्षिणा की... तुरंत ही गिरधारीजी अंगडाई लेकर खडे हो गए और आनंदित होकर 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' भजन करते करते रास्ता काटने लगे।

प्रसंग-६ : कच्छ के भीतर जोडिया बंदर पर रहनेवाले श्रीजीमहाराज के आश्रित एक सत्संगी परिवार की अभी कुछ साल पहले बनी हुई दास्तान है। घर में केवल पति-पत्नि, उनका एक १५-१७ साल का बेटा यह तीन सदस्य एकसाथ रहते थे। पति झांझीबार विदेश में नौकरी करते थे। एक बार मां और बेटा दोनों जोडिया बंदर से जहाज में बैठकर झांझीबार को निकले। सत्संगी मां और बेटा बाजारू कोई भी चीज खाते नहीं थे। इसलिए अपने खान-पान की व्यवस्था उन्होंने खुद ही की थी।

एक दिन ऐसा हुआ कि न जाने खाने में ऐसा कुछ आ गया कि खाने के साथ कुछ ही पलों में मां की मृत्यु हो गई। डॉक्टर ने आकर निदान किया तो पता चला कि इस औरत के शरीर से प्राण चल बसे थे। पुत्र निराधार होकर

कल्पांत करने लगा और अपनी माता के मृत शरीर के पास बैठकर जोर से आक्रंद करने लगा ।

दूसरी ओर जहाज के नियमों के मुताबिक यदि जहाज में किसी की मृत्यु हो तो कुछ वक्त के बाद उस मृत शरीर को समंदर में फेंक दिया जाता है। इसलिए इस पुत्र को भी फरमान किया गया। पर इस पुत्र को तो बचपन से ही अपने मातापिता की रियासत के रूप में भगवान स्वामिनारायण की भक्ति, श्रद्धा एवं निष्ठा मिले थें। उन्होंने जहाज के अन्य मुसाफिरों से बिनती की, ''आप सब मुझे मेरे इष्टदेव भगवान स्वामिनारयण की धुन करने में मेरी मदद कीजिए। मुझे भरोसा है मेरे इष्टदेव मेरी मां को जरूर जिंदा करेंगे।'' और उस बेटे और सभी ने पूर्ण विश्वास के साथ उसकी मृत माता के पास बैठकर महाप्रभु की धुन की।

थोड़ी ही देर में सब की आंखों के सामने एक आश्चर्य हुआ। इस मृत औरत के शरीर में कुछ कुलबुलाहट हुई और वे खड़े हुए। जहाज में बैठे सभी लोगों के मन में भगवान स्वामिनारायण के इस प्रताप को देखकर बड़ा अहोभाव हुआ और मां और बेटा दोनों चैन से झांझीबार पहुंच गए।

१ महामंत्र के प्रताप से

भूतप्रेत आदि का संकट टला

''ते मंत्रथी भूतपिशाच भागे, ते मंत्रथी तो सद्बुद्धि जागे।''

प्रसंग -१ :

पंचमहाल शहर का हीरापुर नामक गांव, जहां पर मोरारजी दवे नामक एक ब्राह्मिन भक्त रहते थे। वह श्रीजीमहाराज के अनन्य आश्रित थे। हररोज सुबह-शाम नित्य भजन-कीर्तन करते, कथा करते और गांव के युवानों को सत्संग भी करवाते। महाराज की निष्ठा भी पक्की थी।

उसी गांव में काली विद्या जानने वाले, मंत्र-तंत्र जानने वाले मावजी नामक एक सुथार रहता था। वह काली चौदस की रात स्मशान में जाता। भूतप्रेत आदि की साधना करता और जिस किसी को भी परेशान करना हो उसे मंत्र-तंत्र से परेशान करता रहता।

गांव का कोई भी इंसान इस मावजी सुथार का नाम तक नहीं ले सकता था। इसलिए मावजीभाई तो ऐसे सब के सिर पर चढ बैठे थे, जैसे पूरी दुनिया का मालिक वह खुद ही है। किसी को भी गाली देते, मारते, परेशान करते और मनचाहा करते रहते, फिर भी उन्हें रोकने वाला कोई नहीं था।

उसी दौरान एक बार उन्हें श्रीजीमहाराज के आश्रित मोरारजी दवे के साथ कुछ बात को लेकर तकरार हुई। उन्हें लगा कि यह भी दूसरे आदमी के जैसा ही है न! यह कौन हो सकता है मुझे रोकने वाला ? ब्राह्मिन को डराने के लिए उसने कहा कि,

''हे ब्राह्मिन! आज रात तेरी खेर नहीं, आज रात तुझे जिंदा नहीं छोडूंगा।''

उसे लगा कि यह भी दूसरे इंसानों की तरह मुझसे बिनती करेगा, मेरे पांव में गिडगिडाएगा, मुझ से माफी मांगेगा।

पर...यह तो स्वामिनारायण का निष्ठावान भक्त ! मंत्र-तंत्र और भूतपिशाच से वह नहीं डरते। सब उनसे डरते।

मोरारजी दवे भी कुछ कम नहीं थे। उन्होंने कह दिया, ''मावला, जा, तुझसे हो सके उतने भूतों को बुला ले। ध्यान रखना कि कोई रह न जाए। और बाद में देखना मेरी करामत। तूने कई लोगो को डराए, धमकाए होंगे, पर वह सब यहां नहीं चलेगा। ''

यह सुनकर अपमानित हुए मावजी सुथार क्रोध से आग-बबूला होकर रात होते ही स्मशान में गए। मंत्र-तंत्र की साधना कर, भूत इकट्ठे किए। तीन सौ भूत एकसाथ मावजी के सामने हाज़िर हो गए। मावजी ने उन सब को आदेश दिया।

''हे भूतपिशाच ! मैं आपको नैवेध करता हूं, आप जो चाहे, वह खाना-पीना देता हूं। आज मैं आपको आदेश देता हूं कि उस मोरारजी दवे को खत्म कर दो। उसे मारकर खा जाओ। उसको जीवित मत छोड़ना। चलिए मेरे साथ, उनके घर ; वह वहीं पर बैठा होगा। मैं दूर से ही अंगुलीनिर्देश कर, आपको बता दूंगा, और जब मैं एक, दो और तीन गिनती करूं तब आप एकसाथ उस पर टूट पडना और उसे खत्म कर देना। आज वह मोरारजी बचना नहीं चाहिए।''

मावजी ने तो भूतों को बराबर का नशा चढ़ाया और उन्हें तैयार किया। तीन सौ भूतों की टोली लेकर मध्यरात्रि को वह मोरारजी दवे के घर के पास आए। मोरारजी अपने घर के आंगन में खटिया डाल, हाथ में माला लेकर मावजी के इंतजार में बैठे थे। भक्तराज ने दूर से ही मावजी के साथ रहे भूतों को देखा। सब को करीब आने दिया। अब मोरारजी दवे ने उन्हें ललकारा, ''मावजी ! अभी भी कोई शेष रह गया हो तो उसे बुला ले, कोई रह न जाए। देख लो, और

मुझे बताओ कि सब आ गए न !''

मावजी भी अपने घमंड में था। उसने कहा, ''सब आ गए, सब मिलाकर पूरे के पूरे तीन सौ है, अब देखो तुम्हारी क्या हालत होती है ?''

मोरारजी दवे ने अपने हाथ में महाराज की प्रसादी के जल का लोटा तैयार रखा था। उन्होंने 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' शब्दों से शेर की तरह दहाड़ लगाई। लोटे के जल से सभी भूतों पर अंजलि छिड़की तो एकाएक सब भूत जलने लगे। चीखते चिल्लाते कोई इस ओर भागा तो कोई उस ओर। तीन सौ के तीन सौ कुत्ते की तरह भागे।

यह देखकर मोरारजी भक्त भी जोश में आ गए और 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' महामंत्र का जाप करते करते वह भूतों को गांव के बाहर तक छोड़ आए।

मावजी सुथार तो बुद्धु की तरह खड़े खड़े देख रहे थे। समझ लीजिए ना जैसे जमकर बर्फ हो गए थे।

क्या बोले ? जैसे मोरारजी दवे नजदीक आए कि बिना बोले वह उनके चरण मे गिर पड़ें। और फूट फूट कर रोने लगे।

कहने लगें, ''आप भी सच्चे और आपके भगवान स्वामिनारायण भी सच्चे। आज से मुझे भी कंठी पहनाकर स्वामिनारायण का सत्संगी बनाइए।''

देखा मुक्तों ! हम भी भगवान स्वामिनारायण की संतान है। इसलिए कभी भी कोई भी भूतप्रेत और मंत्र-तंत्र से डरने की जरूरत नहीं है। यदि कुछ हों, तो भी डोरे-धागे नहीं करने चाहिए। श्रीजीमहाराज में परम श्रद्धा रखनी चाहिए और उनका ही एक आधार रखना चाहिए।

स्वामिनारायण महातंत्र महा बलवान है, इसलिए इस महामंत्र से अपने जीवन में आनेवाली हर समस्याओं को दूर करें।

प्रसंग -२ :

कुछ सालों पहले बनी हुई एक सत्य घटना। अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के

पास एक हरिभक्त रहते थे। उनका एक बेटा, उसका एक दोस्त, जो बनिया था, उसके साथ हररोज सुबह मंदिर पर दर्शन करने आता था।

एक दिन सभा स्थल पर कथा चल रही थी। यह दोनों मित्र मंदिर आए। उस कथा करने वाले पू. संत इस 'स्वामिनारायण' मंत्र का महात्म्य कह रहे थे, "इस स्वामिनारायण महामंत्र में इतनी शक्ति है कि इस नाम का स्मरण करने से भूतप्रेत आदि कोई भी आसुरी तत्त्व उन्हें नहीं मार सकता कि नहीं उनके पास आता। उतना ही नहीं, इस नाम का जाप करने से उस स्थान में भी भूतपिशाच आदि रह नहीं सकते।"

दर्शन करते करते उन दोनों दोस्तों ने इस महामंत्र के महात्म्य को सुना और उसे स्मृति में संग्रहित कर लिया।

एक दिन की बात है। 'विनाशकाल में विपरीत बुद्धि', इस कहावत के मुताबिक एक दिन शाम के वक्त स्कूल के एक शिक्षक ने बनिये के बेटे से थोड़ा प्यार जताते हुए कहा, "चल, आज मेरे साथ घूमने।" यह छात्र तो उन पर भरोसा कर उनके साथ घूमने निकल पड़ा। यह शिक्षक तांत्रिक थे। वो फुसलाकर इस बालक को अहमदाबाद वटवा जी.आइ.डी.सी. की एक सूमसाम जगह पर ले गए। एक शमीवृक्ष के तले इस बालक को खड़ा रखकर दूर जाकर शिक्षक ने साघना कर आराध्य देव को प्रकट किया। और उनसे कहा, "मैं आज आपके लिए एक बलि लाया हूं, आप आइए और इसका स्वीकार कीजिए।" बालक दूर खड़ा खड़ा यह सब देख रहा था। उसी वक्त उसे मंदिर में सुना हुआ स्वामिनारायाण महामंत्र का महात्म्य याद आया और उसने तुरंत ही जाप शुरू किया।

"स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... स्वामिनारायण..."

इससे आराध्य देव वापिस आकर शिक्षक पर बहुत ही क्रोधित हुए और कहने लगे, "बंध करवाओ, बंध करवाओ... इस जाप को... वरना मैं तुझे ही खा जाउंगा।"

लेकिन बालक ने तो और जोर से इस मंत्र का जाप जारी रखा।

‘स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...स्वामिनारायण...।’

‘और जो खड्डा खोदता है, वही उसमें गिरता है’, इस कहावत के मुताबिक आराध्य देव ने उस शिक्षक का ही बलि बना दिया। बालक डर के मारे बेहोश होकर गिर पड़ा। किसी ने आकर उसे अस्पताल पहुंचाया। वहां से घर आकर स्वस्थ होने के बाद उसने सारी हकीकत बताई। यह सुनकर घर के सारे सदस्य स्वामिनारायण की कंठी पहनकर सत्संगी हुए।

प्रसंग - ३ :

किसी एक गांव में स्वामिनारायण के आश्रित सत्संगी रहते थे। उसी गांव में एक तांत्रिक भी रहते थे। जो अपनी काली विद्या की शक्ति के बलबुते पर गांव के सभी लोगों को अपने डर के साये में रखकर उन पर अत्याचार करते थे। एक बार इस तांत्रिक को स्वामिनारायण के भक्त के साथ कुछ नोंक-झोंक हुई और इसी नोंक-झोंक में बात बढ़ गई। उस तांत्रिक ने इस सत्संगी को धमकी दी कि, “काली चौदहवीं की रात देख लेना।” शांत मन से सत्संगी ने उसे केवल इतना ही कहा कि, “भाई, जब काली चौदहवीं के दिन आप अपनी साधना करने जाए तब जरा मुझे भी बताना।”काली चौदहवीं की रात को जब तांत्रिक भूतपिशाच को नैवेद्य देने के लिए बूंदी का बरतन भर ले जा रहे थे, तब सत्संगी ने एक पत्ते पर ‘स्वामिनारायण...’ लिखकर उस पत्ते को बूंदी पर रख दिया और कहा कि,

“भाई, देखना कि वहां क्या होता है।”

स्मशान में पहुंचकर तांत्रिक ने साधना की और जैसे ही भूतपिशाच को प्रकट किया कि वह कहने लगे, “हमारे नैवेद्य पर कोई मंत्र लिखा है, जिसके कारण हम जल रहे हैं, उसे तुरंत वहां से दूर करो वरना हम तुझे खा जाएंगे।”

तांत्रिक ने तुरंत उस मंत्र को बरतन से दूर किया और सोचा कि, “जिस मंत्र में इतनी शक्ति है, वह भगवान कितने शक्तिशाली होंगे ? उनके भक्त के सामने पड़ना मेरा काम नहीं।” अपनी हार स्वीकारते हुए वह श्रीजीमहाराज की महिमा समझकर सत्संगी हुए।

१० महामंत्र के प्रताप से

प्राणघातक जहरीले सांप का विष उतर गया

प्रसंग - १

कच्छ में एक छोटा सा दहींसरा नामक गांव । वहां के हमारे मुक्तराज केसराभाई, जिन्हें हम केसराबापा के नाम से पहचानते हैं। उन्होंने हमारे जीवनप्राण बापाश्री के साथ रहकर, उनकी सेवा कर उनकी बहुत प्रसन्नता पाई थी।

यह केसराबापा एक दिन प्रातःकाल खेत जाते वक्त अंधेरे में कोश लेने गए, उसी वक्त कोश में बैठे जहरीले सांप ने केसराबापा को जोरों से डंस लिया । उन्हें पता तो चल गया, फिर भी हिम्मत करके 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' करते घर आए। गांव के सभी लोगों को पता चला तो सब इकट्ठे हो गए और सब अलग अलग सूचन देने लगे कि, ''पास के गांव में एक तांत्रिक है जो मंत्रित किया हुआ धागा बांधकर सांप के विष को उतारते है, इसलिए वहां ले जाते है ।'' किसी ने कहा, ''ऐसा करो'', किसी ने कहा, ''वैसे करो'', पर जिसके रोम रोम में यह बात पक्की थी कि, 'अनंतकोटि ब्रह्मांड में जो कुछ भी हुआ है, हो रहा है और होगा वह मेरे इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण की इच्छा से ही होता है।' वे ऐसी बातें कैसे स्वीकार सकते है ? उन्होंने सब को केवल एक ही बात कही कि, ''आप सब फिक्र छोड़कर स्वामिनारायण के महामंत्र का जाप करते रहिए। उनकी इच्छा के मुताबिक ही सब कुछ होने वाला है ।'' ऐसा कहकर उन्होंने सब के पास ऊंचे स्वर में

स्वामिनारायण धुन शुरू करवाई। और सब की नजरों के सामने जैसे जैसे धुन होती गई वैसे वैसे सांप का जहर उतरता गया। और अंत में सब कुछ ठीक हो गया।

प्रसंग -२

गढपुर के पास गढाळी नामक गांव। वहां हरिभाई नामक श्रीजीमहाराज के अनन्य आश्रित हरिभक्त रहते थे।

एक दिन उन्होंने किसी कारण जैसे ही संदूक के नीचे हाथ डाला कि एक काले सांप ने डंस लिया। हरिभाई ने जैसे ही हाथ निकाला तो देखा कि सांप ने बहुत जोरों से अपने दांत बिठा दिए थे। और खून भी बहने लगा था। जैसे ही इसका पता गांव में और अपने स्वजनों को चला तो वह सब सांप का विष उतारने वाले को बुला ले आए। पर यह तो महाप्रभु स्वामिनारायण भगवान के आश्रित थे। उन्होंने दृढ़ता के साथ स्पष्ट रूप से सब को बता दिया कि, ''मैं रहूं या न रहूं पर मुझे कोई डोरा-धागा मत पहनाना। यदि किसी को भी मुझ पर तरस आता हो तो मेरे इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण के महामंत्र 'स्वामिनारायण' की धुन कीजिए। इस मंत्र में किसी भी काले सांप का जहर दूर करने की अतूट शक्ति है।'' सभी ने तुरंत 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' धुन शुरू की और कुछ ही देर में जहर उतरने लगा और हरिभाई स्वस्थ हो गए।

वाह दयालु , वाह !

प्रसंग - ३

मूली मंदिर में सद्. श्री हरिकृष्णदासजी स्वामी एवं संतजन संवत १८८४ में शियाणी गांव में सत्संग हेतु आए। रात्रि के वक्त बलदेवचरणदासजी स्वामी अंधेरे में खाट पर बैठे हुए माला कर रहे थे। अन्य सारे संत सो गए थे। इसी दौरान एक बड़ा सांप स्वामी के पांव से लिपट गया। स्वामी चिल्ला उठे इसलिए सब संत जग गए। गांव में सब को पता चला तो सब हरिभक्त भी आ गए। दिया जलाकर देखा तो स्वामी के पैरों में एक बड़ा सा सांप लिपटा हुआ

था। सब के होश उड़ गए। अब क्या करें ?

स्वामी ने कहा, ''संतों-भक्तों, कोई भी गभराइए नहीं, श्रीजीमहाराज की इच्छा के अनुसार ही सब कुछ होता है। हमारे इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान का महामंत्र महाबलवान है। उससे काले सांप का जहर भी दूर हो जाता है, यहां तो केवल सांप को दूर करना है। आप केवल थोड़े दूर बैठकर स्वामिनारायण की मूर्ति धारकर महामंत्र की धुन करें, और मेरे हाथों में तो माला है ही, तो मैं उससे महाराज का भजन करूंगा।''

और ऐसे सभी ने थोड़े दूर बैठकर धुन शुरू की। एक घंटा... दो घंटा... और जैसे ही तीन घंटे हुए कि धुन के प्रताप से सांप ने काटा तो नहीं, पर धीरे से उतरकर चला गया।

प्रसंग -४

हमारे महासमर्थ सद्‌गुरु श्री ईश्वरचरणदासजी स्वामी अहमदाबाद में सरसपुर में बिराजते थे। सद्‌गुरु अद्‌भुत सामर्थ्यवान थे और स्वामिनारायण महामंत्र का प्रौढ प्रताप भी था कि यदि किसी को भी काले सांप का डंस लगा हो और उनके पास लाया जाए तो वह श्रीजीमहाराज को प्रार्थना कर, 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' बोलकर हस्त से स्पर्श करते तो तुरंत महाराज की कृपा से जहरीले सांप का विष उतरने लगता।

वाह सद्‌गुरु, वाह! और स्वामिनारायण महामंत्र का प्रताप, वाह!

प्रसंग -५

मेश्वो नामक नदी के तट पर लवाड़ नामक एक गांव था। गांव में दोलतसिंह नामक एक राजवी रहते थे। वह स्वभाव से बिलकुल क्रूर एवं घातकी थे। यदि गांव में कोई साधु-संत आए तो उसे पशु की तरह मारने से भी वह नहीं थकते थे। एक दिन की बात है कि हमारे महासमर्थ सद्‌गुरु श्री निर्गुणदासजी स्वामी संतो के साथ इस गांव में पधारें। एक हरिभक्त ने हृदयभाव से संतों को अपने घर बसेरा दिया और खाना खिलाया। पर जब दोलतसिंह को पता चला तब

उन्होंने संतो को अपमानित कर उन्हें घर से निकाल दिया। ऐसे महासमर्थ सद्‌गुरुश्री के अपराध एवं द्रोह का परिणाम दोलतसिंह को कैसा मिला ? एक दिन दोलतसिंह के इकलौते बेटे तखुभा की शादी थी। पिछली रात यह तखुभा घर के पिछले हिस्से की खुली जगह में लघुशंका करने गए। उसी वक्त अंधेरे में एक सांप ने तखुभा को डंस लिया। दर्द के कारण बड़ी जोर से चिल्लाकर तखुभा वहीं गिर पड़े। और देखते ही देखते काले सांप का कातिल जहर शरीर में फैल जाने के कारण तखुभा के देह से प्राण निकल गए। सारे स्नेही एवं स्वयं दोलतसिंह भी फूट फूट कर रोने लगे। इसी वक्त, दोलतसिंह ने जिन संतों को अपमानित कर गांव से निकाल दिए थे, वही सद्‌गुरु निर्गुणदासजी एवं अन्य संत फिर से गांव में आए। उन्होंने देखा कि गांव के रहावन में तखुभा के मृत्यु से रोना चल रहा था। गांव में संतों के आने की खबर मिलते ही किसी ने कहा कि, "दोलुभा, आपने उस दिन स्वामिनारायण भगवान के संतो का अपराध किया था। उसीका यह परिणाम मिला है। वह संत फिर से गांव में आए तो वहां जाकर उन्हें प्रार्थना करो।" दोलतसिंह अपने बेटे के प्राण के खातिर निर्मानी होकर दौड़कर नदी के तट पर स्नान करके बैठे हुए संतों के चरण में जा बैठे और जाकर उनसे बहुत ही प्रार्थना की। संत हृदय हमेशा दयालु ही होता है। संत दोलतसिंह के घर आए। सब को शांत करके बोले, "कोई फिक्र न करें। हमारे इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान बहुत समर्थ है, और उनका षडाक्षरी स्वामिनारायण महामंत्र बहुत ही बलवान है। इसलिए आप सब हमारे साथ बैठकर स्वामिनारायण महामंत्र की धुन कीजिए। सब ठीक हो जाएगा।" और स्वामीश्री के इस वचन से दोलतसिंह धुन में लीन हो गए। दो घंटे धुन होते ही सांप ने आकर जहर चुस लिया और तखुभा के शरीर से जहर उतरने लगा। और देखते ही देखते उसके शरीर में जान आई। और थोड़ी ही देर में वह अंगड़ाई लेकर खड़े हो गए। यह चमत्कार देखकर सब प्रसन्न हो गए। दोलतसिंह के परिवार के साथ अन्य कई मुमुक्षु भी भगवान स्वामिनारायण के आश्रित हुए।

११ महामंत्र के प्रताप से

महासंकट से बचे

"सुखी करे संकट सर्व कापे, छते देहे मूर्तिधाम आपे।"

प्रसंग-१ : लखनौ नामक शहर था। इस शहर में मुस्लिम नवाबी राज्य चलता था। राज्य के दीवान थे वे एक बुद्धिमान बनिया थे। सालों तक उन्होंने दीवान पद संभाला। एक दिन कुछ गलती हो जाने से नवाब ने उन्हें केद में ड़ाल दिया। कई दिनों की सजा के बाद उन्हें रिहा किया गया। पर निर्दय नवाब ने दिवान को एक करोडं रुपये का जुरमाना दिया। एक महिने के अंदर यदि यह रुपये नहीं दिए गए तो इस हिन्दु बनिये को मुसलमान बना दिया जाने का आदेश दिया गया। जुरमाना पूरा करने के लिए बेचारे दीवान ने अपने घर की सारी चीजें बेच दी, अपना घर तक बेच दिया। ब्याज पर पैसे लिए, फिर भी इतनी बडी रकम उनसे जुंट नहीं पाई। बनिये ने सोचा कि हिन्दु से मुस्लिम होने से तो यह बेहतर है कि आत्महत्या कर के प्राण त्याग दिए जाए। ऐसे विचार से अंतिम वक्त वह एक मंदिर में दर्शन हेतु गए। वहीं पर प्रदक्षिणा करते करते वह आक्रंद कर रहे थे। उसी वक्त भगवान स्वामिनारायण के संत सद्‌गुरुश्री व्यापकानंद स्वामी एवं दो संतों को देखा। इन संतों को देखकर बनिया अनकी गोद में अपना सिर रखकर आक्रंद करने लगे। उनके आक्रंद का कारण संतों ने जाना और शांत चित्त से कहा कि, "**हे बनिये ! यह लो हमारी माला और घर जाकर एकाग्र चित्त से स्वामिनारायण महामंत्र का जाप शुरू करो। आप जरूर सभी संकटों से मुक्त हो जाओगे।**" और इस प्रकार आशिष देकर उन्हें घर भेजा।

घर आकर बनिये ने घर के द्वार बंध कर संपूर्ण श्रद्धा के साथ 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' महामंत्र का रटन शुरू किया। दूसरी ओर अक्षरधाम के अधिपति महाप्रभु भगवान स्वामिनारायण ने अंतर से दिए हुए आशीर्वाद को पूर्ण करने के लिए सोचा कि,

"हवे करवुं एनुं काज, थया साबदा पोते महाराज;
वाले लीधो वणिकनो वेश, सुंदर मोळिडुं बांधियुं शीश,
पहेरी अंगरखी लांबी बांय, चाल विशाळ लडसडे पाय;
बांध्यो कमरे कसुंबी कणो, सोनेरी छेडे शोभे छे घणो,
तेमां खोसी छे सुंदर दोत, कांधे दुशाल झीणेरी पोत;
हसे मुखे पडे खाड़ा गाल, मोटा धनाढ्य झळके भाल,
कांई बोले मुखेथी तोतळियुं, लीधा रूपिया भरी कोथळियुं;
लीधा सेवक संगे बे-चार, आव्या शामळियो शहेर मोझार।"

और महाप्रभु श्रीहरि स्वयं एक धनी बनिये का वेश लेकर रुपयों की थैलियां भरकर, नवाब के यहां पहुंचे और दीवान के नाम पर रूपये जमा करवाएं। दीवानजी आई हुई इस विपत्ति से बच तो गए पर महाप्रभु की चटकंती चाल और चमकीला उनका मुखारविंद नवाब के दिल में ऐसे बस गए कि, उन्होंने दीवानजी को घर से बुलाकर उनके जुरमाने के रुपये मिल जाने की बात कही और फिर से बदतमिजी के साथ कहा कि, "हे दीवानजी ! आपके रुपये देने जो सेठ आए थे, उनकी छवी मेरे चित्त से दूर नहीं हो रही। मुझे उस सेठ के दर्शन करने है। आप फिर से उन्हें बुलाईए, वरना मैं आपकी सजा जारी रखूंगा।"

अब क्या होगा ? फिर एक नई आपत्ति आ खड़ी हुई। फिर भी दीवानजी के दिल में एक जोश था। घर जाकर फिर से अकेले बैठकर 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' महामंत्र का जाप शुरू किया। फिर से महाप्रभु स्वामिनारायण वही रूप धर नवाब के पास आए और कहा कि, "हे नवाब ! हम खुदा है। यदि इस निर्दोष बनिये को फिर से परेशान

किया तो मैं तुम्हें हिन्दु बना दूंगा।" उसके बाद बनिये की आपत्ति हमेशा के लिए दूर हो गई। और वह अपने परिवार के साथ श्रीजीमहाराज के अनन्य आश्रित हुए।

(प्रसंग भक्तचिंतामणि : अध्याय १३० के आधार पर)

प्रसंग-२ : सौराष्ट्र में माणसा नामक एक गांव है। उनके मुखिया मामैया वरु थे। उन्हें एक पुत्र था - वालेरा। वालेरा को बचपन में ही उसकी मां छोड़कर चल बसी थीं। इसलिए मामैया ने दूसरी शादी की, पर वक्त के बीतने पर इस सौतन मां ने मामैया की जमीन-जायदाद में से उनके बेटे वालेरा को हिस्सा न देने दिया। वालेरा ने अपने दोस्त की सहायता से जब तक अपना हक न मिले तब तक लोगों में लूंटमार करके परेशान करने का तय किया। आसपास के सारे गांव में उनका कहर मचने लगा।

इसी बीच एक दिन जूनागढ से अनादिमुक्त सद्. श्री गुणातीतानंद स्वामी विचरण करते करते इस प्रदेश में आए। यहां के भक्तजन स्वामी को इस प्रदेश में हो रही लूंटमार एवं अन्य परेशानीओं के बारे में बतला रहे थे, कि तभी सामने से घोड़े पर बैठकर वालेरा और उनके साथी आते दिखाई दिए। जब वालेरा स्वामी के पास आया तब निर्भय सद्. श्री गुणातीतानंद स्वामी ने वालेरा को रोककर कहा, "वालेरा ! इस तरह लूंटमार करके लोगों को परेशान करते रहोगे तो यमपुरी के दुःख सहने पडेंगे और चोरासी लाख योनि के चक्कर लगाने पडेंगे, इसलिए यह बुरा काम करना छोड़ दे।"

सद्गुरु के इन शब्दों ने वालेरा के हृदय को छिन्न कर दिया। वह तुरंत घोड़े पर से नीचे उतरें और स्वामी के चरणों में बैठकर अपनी सारी बात बताई, बिनती के स्वर में कहा कि, "हे स्वामीजी ! यदि मुझे मेरा वारसाइ हिस्सा मिल जाए तो मैं अपना यह व्यवसाय हमेशा के लिए छोड़ देने के लिए तैयार हूं।" दयालु मूर्ति सद्गुरु तुरंत अपनी प्रसादी की माला वालेरा के हाथ में देकर बोले, "वालेरा, इस माला को अपने घर ले जाकर, सर्वोपरी स्वामिनारायण महामंत्र

का जाप करना । जा, आज से आठवें दिन तुम्हारे पिता स्वयं तुम्हें बुलाकर तुम्हारा हिस्सा देंगे । ऐसा होने के बाद तुम जूनागढ आकर सत्संगी होना ।''

सद्‌गुरु के आशीर्वाद सुन वालेरा बड़ा खुश हो गया और बोला, ''पर स्वामीजी मैं तो बिलकुल अनपढ हूं, मुझे तो दिन गिनने तक नहीं आते, मुझे कैसे पता चलेगा कि कब आठ दिन हुए ?'' सद्. गुणातीतानंद स्वामी ने उनकी सरलता के खातिर वालेरा ने जो वस्त्र पहना था, उनमें से एक डोर खींचकर उसमें आठ गांठ लगा दी और कहा कि, ''जा वालेरा, प्रतिदिन इस की एक गांठ छोड़ते रहना, जैसे जैसे यह गांठ छूटती जाएगी वैसे वैसे तुम्हारे पिता के हृदय में पड़ गई गांठ भी छूटती जाएगी । स्वामिनारायण महामंत्र बहुत ही बलवान है, वह जरूर तुम्हारे पिता को सद्‌बुद्धि देगा ।''

संपूर्ण श्रद्धा के साथ घर जाकर वालेरा ने घर के द्वार बंध कर 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' का रटन शुरू कर दिया । दूसरी ओर इस बलवान महामंत्र के प्रताप से मामैया और उनकी दूसरी पत्नी को बेटे के साथ हुए अन्याय से पछतावा होने लगा । बिलकुल आठवें दिन ही सुबह मामैया ने एक आदमी को भेजकर वालेरा को अपने दरबार में बुलाकर उसे अपनी जायदाद में से आधा हिस्सा दे दिया और सालों से चलते झगड़े को साथ में बैठकर भोजन करके खत्म किया । वालेरा तुरंत सद्. श्री गुणातीतानंद स्वामी के पास गए, कंठी पहनकर अपने परिवार के साथ वह भी सत्संगी हुए ।

वाह प्रभु, वाह ! कैसा आपके महामंत्र का प्रताप !!!

<u>प्रसंग-३ :</u> एक छोटा सा गांव था । जिसमें करमशीभाई नामक एक सोनी भक्त रहते थे । घर में केवल पति-पत्नी दो ही थे और भगवान स्वामिनारायण का शांति से भजन करते थे । पर गांव में उनके अन्य स्वजनों का बहुत ही विरोध था । फिर भी हिम्मत से काम लेकर यह पति-पत्नी महाराज के बलबूते पर संसार चक्र चला रहे थे । इसी बीच महाराज की कृपा से उनके यहां एक पुत्र

की प्राप्ति हुई। इस पुत्र को महाप्रभु की पूंजी समझकर पति–पत्नी दोनों उसकी परवरीश करने लगे। इसी बीच एक बहुत ही बड़ा संकट आ पड़ा। हुआ यूं कि पुत्र अभी तीन महीने का ही था की भक्त की पत्नी बीमार हो गई और महाराज ने उसे अपने धाम में बुला लिया। उस ज्ञानी हरिभक्त को पत्नी वियोग का दु:ख नहीं था। पर छोटे से इस बच्चे को उसकी माता के बिना स्तनपान करवा के बड़ा कौन करेगा ? यही सब से बड़ा दु:ख था। भक्त उलझन में पड़ गए, अब क्या किया जाए ? इस बच्चे को कैसे बड़ा किया जाए ?

इस आपत्ति से दु:खी हुए भक्तराज महाप्रभु के स्वामिनारायण महामंत्र का महात्म्य समझकर रात को महाराज की मूर्ति के समक्ष बैठकर भजन और प्रार्थना करने लगे। आंसुओं की धारा के साथ वह महाराज को नम्र भाव से प्रार्थना कर रहें थे। ''स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...'' का भजन कर रहें थे।

परिणाम स्वरूप प्रात: काल में महाप्रभु श्री स्वामिनारायण भगवान ने भक्त को तेजोमय दर्शन देकर कहा कि, ''हे भक्तराज, चिंतित न हों। सब ठीक हो जाएगा। पुरुष के स्तन में कभी भी दूध नहीं आता, पर इस बालक को आप ही स्तनपान कराकर उसे बड़ा कीजिए। आपके किस्से में यह असंभव बात संभव होगी। इसी तरह बालक बड़ा होगा।''

ऐसे दिव्य आशीर्वाद देकर महाप्रभु अदृश्य हो गए। दिए गए वरदान के मुताबिक भक्त ने बालक को स्तनपान कराकर बड़ा किया।

यहा महाप्रताप है... सर्वोपरी स्वामिनारायण महामंत्र का।

१२ महामंत्र के प्रताप से

सद्बुद्धि जगी

एक छोटा सा गांव था। उस गांव में एक श्रीजीमहाराज का आश्रित सत्संगी परिवार बसता था। इस परिवार की एक संस्कारी बेटी की शादी हुई। उसके मातापिता ने उसे ससुराल बिदा की, पर उसके ससुराल में सत्संग नहीं था। इतना ही नहीं, सब स्वामिनारायण संप्रदाय के प्रखर विरोधी थे। इसलिए इस घर में बहू बनकर आई सत्संगी बेटी को सत्संग छुड़वाने के लिए ससुराल वालों ने उसकी पूजा फेंक दी। उसकी कंठी तक तोड़ दी और साथ साथ स्वामिनारायण का नाम तक न लेने का फरमान किया गया।

जो बेटी बचपन से सत्संग के रंग से रंगी हुई थी, उसे इससे कितना दुःख होगा ? दुःखी हुई इस बेटी ने ससुराल से माइके आकर ससुराल में अपने प्रभु की भक्ति में हो रहे विघ्न के बारे में बताया। उसी वक्त गांव के मंदिरों में संत आए हुए थे। बेटी के पिता ने बेटी का दुःख संतों को कहा। संतों ने कहा कि, ''आपकी बेटी को बताइए कि घर में खाना बनाते वक्त, पानी भरते वक्त, तेल, घी छानते वक्त या किसी भी क्रिया में 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' महामंत्र का रटन सदा चालु रखें। उस मंत्र के रटने के साथ बनाया गया खाना परिवार के जो सदस्य खाएंगे उन सब को महाप्रभु सद्बुद्धि प्रदान करेंगे। अवश्य वह सब सत्संगी होंगे।'' संतों की आज्ञा के मुताबिक इस बेटी ने ससुराल जाकर रोटी बनाते वक्त या दाल-चावल या सब्जी बनाते वक्त 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण' का जाप शुरू किया। ऐसा प्रतिदिन करने से

घर के सारे सदस्यों की बुद्धि निर्मल होती गई। और उन्हें भी सत्संग के प्रति लगाव सा होने लगा। थोडे दिन बीतने के बाद एक दिन इस बेटी के पति ने कहा, ''जब इस बार तुम अपने पिता के यहां जाओ तब कंठी और पूजा लेकर आना। मेरे लिए भी कंठी लेकर आना।'' इस स्वामिनारायण महामंत्र के कारण धीरे धीरे घर के सभी सदस्य सत्संगी हो गए। इसलिए कहा गया है कि,

''ते मंत्रथी तो सद्बुद्धि जागे।''

१३ महामंत्र के प्रताप से

कामुकता जलकर राख हो गई

प्रसंग-१ : यह बात पंजाब की है। भगवान स्वामिनाराण के आदेश से सद्. श्री सुखानंद स्वामी एवं अन्य पांच संत सत्संग हेतु पंजाब की भूमि पर आए। बारिश की ऋतु थी। एक वृक्ष की छाया में संतों ने बसेरा किया था। शाम के वक्त एकदम से वहां बारिश शुरू हो गई। बारिश में भीगकर सभी संत कांप रहे थे। तभी एक भव्य महल के झरोखे में बैठी एक स्वरूपवान औरत ने सब संतों को कांपते देखा। और उसके मन में दयाभाव जागृत हुआ। उसने अपने नौकर को भेजकर संतों को अपने महल में ठहरने की बिनती की। संत महल में आए। महल के नौकर के साथ संतों ने औरत को खबर भिजवाई की वह नीचे न आए। इस औरत के आग्रह को वश होकर तीन दिन के उपवास के बाद संतों ने खिचड़ी खाई। रात का वक्त था। उस नौकर को संतों ने पूछपरछ की कि, ''यह महल किसका है ? यहां पर कौन रहता है ?'' तभी उन्हें उत्तर मिला कि, ''पंजाब के राजा रणजितसिंह की एक रखात औरत इस महल में रह रही हैं।'' इस उत्तर को सुनकर संत हैरान रह गए। पर तुरंत ही दयालु संतों ने स्वामिनारायण महामंत्र की धुन शुरू कर दी। सारी रात धुन की। जैसे जैसे महामंत्र के शब्द झरोखे में बैठी स्वरूपवान औरत के कान में पड़ते गए, वैसे वैसे उसका हृदय निर्मल होता गया। उसके अंतर की मलिन वासना जल गई। और धीरे धीरे वह भी इस धुन के साथ धुन गाने लगी। सुबह हो गई और संत स्नान करके बिदा हुए। अपने झरोखे में खड़े रहकर इस औरत ने संतों के दर्शन किए।

एक दिन, दो दिन और तीन दिन हुए कि, इस औरत का सारा मानस, वासना से लथपथ था, वह बदल गया। उसकी आत्मा जाग उठी। एक दिन उसने किए पापों के पश्चात्ताप के रूप में यह वेश्या भी बैरागन हो गई। महल छोड़कर चल पड़ी। जाते जाते नौकरो से कहती गई कि, ''राजा रणजितसिंह को बताना कि, अब मेरे इस हड्डी, मांस एवं रुधिर से भरे देह के प्रति आसक्त न हों। अब मैं अविनाशी वर को प्राप्त करने हेतु जा रही हूं। मैं उनको पाकर ही रहूंगी, इसलिए मुझे ढूंढने की मिथ्या कोशिश मत करना।''

जंगल में जाकर एक नदी के किनारे पर्ण कुटिर में इस स्त्री ने निवास किया। भगवान स्वामिनारायण को पाने के लिए संतों के मुख से सुने स्वामिनारायण महामंत्र को जपना शुरू किया। जब तक महाप्रभु से मुलाकात न हो, तब तक अन्न एवं जल का भी त्याग किया। बस, हरदम 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' महामंत्र का रटन करती रही।

इस ओर जब रणजितसिंह कामासक्त होकर महल में आते हैं, तब अपनी रखात को न देखकर, वासना की आग में जल रहे राजा उनको ढूंढने के लिए निकल पड़े। आज इस औरत के अनशन व्रत का आठवां दिन था। उसके मुख में पूरे आठ आठ दिन से महामंत्र का रटन हो रहा था। परिणाम स्वरूप उसकी वासना जलकर राख हो गई। महाप्रभु में आसक्त हुई इस औरत की मुलाकात जब महाराजा रणजितसिंह से हुई, तब उसके तेजस्वी मुखारविंद को देखने के साथ ही कामासक्त हुए राजा की वासना का भी तत्काल विनाश हुआ। साथ साथ भगवान स्वामिनारायण ने दिव्य स्वरूप से दर्शन देकर इस औरत को अपने अक्षरधाम में दिव्य गति प्रदान की।

इतना ही नहीं, महाप्रभु भगवान स्वामिनारायण का महात्म्य समझने वाले रणजितसिंह को भी श्रीजीमहाराज २७ जून, १८३९ के दिन दर्शन देकर अक्षरधाम में ले गए। धन्य हो... धन्य हो... इस दिव्य और भव्य स्वामिनारायण महामंत्र के प्रौढ प्रताप को! (इस प्रसंग की नोंध 'पंजाब का इतिहास' नामक पुस्तक में ली गई है।)

प्रसंग-२ : एक वक्त काशी के राजा अनोपसिंह थे। उनके धर्मपत्नी इडर के राजा की बेटी थी। शादी के बाद जब बेटी अपने ससुराल आई तब दहेज में अपने पिता के घर से स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति एवं सत्संग लाई थीं। उनके यहां एक बेटी का जन्म हुआ, जो बड़ी होने के बाद बहुत ही स्वरूपवान एवं गुणवान् हुई। एक दिन राजा अनोपसिंह शिकार हेतु जंगल में दूर तक निकल गए। अचानक एक शेर ने दहाड़ लगाई और अनोपसिंह पर छलांग लगाई और जैसे ही राजा को मोत के शरन उतारने जा रहा था कि साथ रहे एक अंगरक्षक ने बंदूक की गोली से शेर को मार गिराया और राजा बच गए। दूसरे दिन भरे दरबार में राजा ने अपनी जान बचाने के लिए इस अंगरक्षक को कुछ मांगने के लिए कहा। वह अंगरक्षक कई दिनों से राजा की जवान बेटी के रूप में मोहित हुआ था। कामासक्त होकर उन्होंने 'आपकी बेटी के साथ मेरी शादी करवाएं' ऐसा मांगा। राजा और रानी यह सुनकर हैरान रह गए। पर महाप्रभु स्वामिनारायण में अनन्य श्रद्धा रखने वाली जवान बेटी ने वक्त को संभालकर भरे दरबार में अंगरक्षक से कहा, "ठीक है, मैं आपके साथ शादी करने के लिए तैयार हूं, पर एक शर्त है कि सुविधापूर्ण कमरे में आपको अपने सामने भगवान स्वामिनारायण की मूर्ति रखकर, हाथ में माला लेकर छह माह तक 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' का जाप करना होगा। और तब तक कमरे से बाहर भी निकलना नहीं है।"

शर्त के मुताकिब एक बंद कमरे में श्री सहजानंद स्वामी की एक चक्षु वाली प्रसादी की मूर्ति के सामने बैठकर मोह में अंधे हुए इस अंगरक्षक ने स्वामिनारायण महामंत्र का रटन शुरू किया। और... अहा... हा ! हा ! जिस महामंत्र के प्रताप से जीव की अनादिकाल की कामुकता जल जाती है ऐसी जिसकी महिमा है वैसा ही हुआ। जैसे कुल्हाडी लकड़े को काटती है, ऐसे ही, जैसे जैसे भजन होता गया, वैसे वैसे उनके भीतर की कामुकता भी जल गई। चार माह खत्म

हुए कि अंतर से निर्मल और निर्वासनिक हुआ यह अंगरक्षक बाहर निकलकर संसार का त्याग कर साधु हो गया। और निष्कामानंद स्वामी नाम ग्रहण कर श्रीजीमहाराज के पास दीक्षा ली।

वाह, प्रभु ! क्या प्रताप है स्वामिनारायण महामंत्र का !

प्रसंग-३ : एक युवा छात्र बारहवीं कक्षा में पढ़ता था। मित्रों के संग बाजार में मिलते ग्रामिण साहित्य का एक बार वांचन हो गया। परिणाम स्वरूप उसके मानस में कई विकृत विचार घर कर गए। जैसे ही पढ़ाई करने बैठता वैसे ही, उसे पढा हुआ और देखा हुआ सब याद आने लगता, जिससे पढ़ाई में उसका मन ही नहीं लगता। वह बहुत परेशान सा हो जाता... बहुत हैरान हो जाता ... दु:खी हो जाता। 'मेरा क्या होगा ? मैं जरूर नपास हो जाऊंगा। मेरी जिंदगी बरबाद हो जाएगी...' ऐसे कई विचारों से भयभीत हो गया। इसी दौरान उसकी मुलाकात एक संत से हुई। उन्होंने महामंत्र की एक मंत्रपोथी (नोट) लिखने के लिए उसे दी और कहा, "प्रतिदिन आधा घंटा 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' महामंत्र का लेखन करना, महाराज अवश्य दया करेंगे।" उसने संत आज्ञा को शिरोधार्य रखकर मंत्रपोथी में लिखना शुरू किया। दिन-ब-दिन इस महामंत्र के प्रताप से भीतर के बुरे विचार नष्ट होने ष्टङ्कलगे। पढ़ाई में मन लगने लगा और वह बारहवीं कक्षा में अच्छे गुनांक से पास भी हो गया। इस तरह, उसकी जिंदगी का करियर भी बन गया। इसलिए ही कहा गया है कि,

"जळे करीने तनमेल जाय, आ नामथी अंतर शुद्ध थाय।"

आइए, हम भी प्रतिदिन आधा घंटा या घंटा एकाग्र चित्त से प्रभु में लीन होकर स्वामिनारायण महामंत्र का लेखन करें।

१४ महामंत्र के प्रताप से

महारोग भी मिटे

<u>प्रसंग-१ :</u> यह प्रसंग गोंडल गांव के मुखिया दादभा का है। चालीस साल की उम्र में एकदम से उनकी आंखों का तेज चला गया। आंखों के सामने बिलकुल अंधेरा छा गया। इस कम उम्र में आई पराधीनता से दादभा दुःखी हो गए।

एक दिन जूनागढ से सद्. श्री गुणातीतानंद स्वामी गोंडल गांव के मंदिर में पधारे है ऐसी दादभा को खबर मिली। उन्होंने एक आदमी भेजकर सद्गुरु को पधरामणी के लिए अपने घर बुलाया। स्वामीश्री घर आए तो दादभा ने अपनी दर्दभरी कहानी सुनाई।

स्वामी से बहुत प्रार्थना की। स्वामीश्री तो अति दयालु ही थे। उन्होंने दादभा दरबार से कहा, ''फिक्र मत कीजिए, हमारे इष्टदेव ने दिया हुआ स्वामिनारायण महामंत्र महाबलवान है। भगवान स्वामिनारायण के बहुत बड़े आशीर्वाद है। इसलिए आप ब्रह्मचर्य का व्रत लें और पूरे दिन भगवान की मूर्ति के समक्ष 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' भजन चालु करें। महाप्रभु जरूर आपकी मदद करेंगे। दादभा दरबार ने स्वामी की आज्ञा को शिरोधार्य किया। वह दिन-रात इस महामंत्र का जाप करने लगे। स्वामी के आशीर्वाद से एक, दो और तीन... जैसे जैसे दिन बीतते गए कि उनकी आंखों का तेज वापिस आने लगा। महाप्रभु की कृपा से सात दिन के बाद वह फिर से पहले की तरह देखने लगे।

वाह दयालु, वाह ! कितना अद्भुत है आपके प्रौढ प्रतापी महामंत्र का प्रताप।

<u>प्रसंग-२ :</u> वर्तमानकाल में नये नये सत्संगी हुए तथा कांकरिया प्राणी संग्रहालय में कार्य कर रहे उत्तरप्रदेश के निवासी श्री जगदीशभाई मौर्य के जीवन में घटित हुआ यह प्रसंग है । अल्प समय में ही वह एस.एम.वी.एस. संस्था के पू. संतों के संग से सत्संग में बहुत बलिष्ठ हो गए और बापजी के कृपावंत भक्त हुए ।

एक दिन इस जगदीशभाई के चाचा उनके वतन में भगवान के धाम में गए । इसलिए उनकी विधि करने के लिए वे उत्तरप्रदेश गए । उनके वतन पहुंचने के बाद घर के सभी सदस्य रात को साथ बैठे थे तब उनके एक दूर के मामा गंगादीन मौर्य ने बताया कि, ''पिछले आठ महिनों से कई उपाय और दवाईयों के बावजूद भी मुझे नींद नहीं आती यानी की मुझे अनिद्रा का रोग हुआ है ।'' उन्होंने आगे बताया कि, ''मुझे लगता है कि अब थोड़े ही दिनों में मेरा दिमाग अस्थिर हो जाएगा ।''

यह सुनते ही जगदीशभाई की श्रीजीमहाराज के प्रति निष्ठा प्रज्वलित हो उठी । उन्होंने श्रीजीमहाराज से प्रार्थना कर, मामा से कहा कि, ''यदि आप श्रद्धा और भरोसा रखो तो हमारे सर्वोपरी इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण का 'स्वामिनारायण' महामंत्र बहुत ही बलवान है । यह लीजिए माला और लेटे लेटे इस मंत्र का जाप करें । यही आपकी दवाई है, प्रभु जरूर आपको नींद ला देंगे ।''

गंगादीनभाई तो पहले से ही अनिदा के कारण थक गए थे । इसलिए वे जगदीशभाई ने दिए सुझाव को अजमाने तैयार हो गए । उन्होंने तो पहली बार ही स्वामिनारायण का नाम सुना था । बड़ी कठिनाई के बाद वह 'स्वामिनारायण' महामंत्र बोलना सिख पाए । वे रात को नौ बजे माला लेकर स्वामिनारायण महामंत्र का रटन करते करते एक अलग कमरे में सोए और श्रीजीमहाराज की कृपा से सुबह सात बजे तक जगदीशभाई गहरी नींद में थे ऐसा जगदीशभाई ने देखा । जब वह जागे तब अत्यंत प्रसन्नता से कहा कि, ''केवल पंद्रह-बीस

मिनट स्वामिनारायण महामंत्र की माला का जाप किया और कब नींद आ गई पता ही नहीं चला। सचमुच, यह महामंत्र बहुत प्रतापी है।'' उसी दिन से आज तक गंगादीनभाई प्रतिदिन माला लेकर ही सोते है। और आज भी उन्हें दवाईयां के बिना ही महामंत्र के जाप करते करते नींद आ जाती है।

वाह प्रभु, वाह !

१५ महामंत्र के प्रताप से

यमदूत भागे

<u>प्रसंग–१ :</u> यह एक किस्सा पंचमहाल जिले का है। संतरामपुर तहसील के भीतर भुगेडी नामक एक छोटा सा गांव। जहां पर चंदुभाई पंचाल नामक सत्संगी रहते थे। उनका छोटा बेटा प्रदीप काली विद्या और मंत्र–तंत्र से तांत्रिक बनकर अभुआता और अंध विश्वासी लोगों को उल्लु बनाता था। हमारे संत एक बार चंदुभाई के घर गए। तो देहाभिमानी प्रदीप ने कंठी नहीं पहनी थी।

एक बार राजस्थान की सरहद के एक गांव में किसी को भूत की छाया लग गई। उसे निकलवाने के लिए प्रदीप वहां पर गया। पर आज उनकी काली विद्या उलटी पड़ी। वह धडाम से गिर पड़ा, मुंह से खून तक निकलने लगा। वह बेशुद्ध हो गया। तुरंत उसे झालोद के अस्पताल में ले जाया गया। डॉक्टर ने अपने हाथ ऊपर ऊठा लिए। इसलिए उसे घर लाया गया। उनके घर आए सभी स्वजन उनके इर्दगिर्द घेरा बनाकर खड़े थे। रात के बारह बजे उनके पिता चंदुभाई को दो बड़े से यमदूत दिखाई दिए। कुछ ही देर में तो इस प्रदीप के शरीर से प्राण चल बसे। सबने रोना शुरू किया। उस वक्त चंदुभाई को गोधर के प्रसंग में प.पू. बापजी के मुख से सुनी महामंत्र के जाप की बात याद आ गई। उन्होंने फौरन ही घर में रही घनश्याम महाराज एवं बापाश्री की मूर्ति लाकर प्रदीप के शब पर रखी। फिर सारे परिवार ने इकट्ठा होकर स्वामिनारायण महामंत्र की धुन शुरू की। और अभी तो एक घंटा हुआ था कि प्रदीप का शरीर हिला। और दूसरी ओर चंदुभाई ने यमराज को भागते देखा।

उसी वक्त घर के पिछले हिस्सेवाली किवाड़ तूट गिरी।

अब प्रदीप होश में आया और उसने 'स्वामिनारायण भगवान ने मेरी जान बचाई', यह बात कही। दूसरे दिन दि. २४-१२-१९९५ के दिन गोधर मंदिर का समैया था। वहां दोनों बाप-बेटे आए और उन्होंने सभा में इस प्रसंग की दास्तान सुनाई। प्रदीप भी कंठी पहनकर चुस्त सत्संगी हुए।

ऐसे अलौकिक महाप्रतापी महामंत्र का जाने-अनजाने, भाव से-कुभाव से, एक-दो बार नाम जप लिया फिर भी महाप्रभु ने उनके जन्म-मृत्यु के फेरे मिटा दिये हैं।

<u>प्रसंग-२ :</u> कारियाणी नामक गांव में मंदिर के पीछे एक बुढ़िया रहती थीं। वह स्वामिनारायण भगवान के इतने खिलाफ थीं कि, भूल से भी कभी स्वामिनारायण भगवान का नाम न लें। महाराज को इस बात का पता चला। इसलिए उन्होंने एक बार दृढ़ निश्चय किया कि, 'किसी भी तरह इस बुढ़िया के मुख से स्वामिनारायण का नाम बुलाया जाएं।' इसलिए एक दिन सुबह महाप्रभु ने भगुजी से कहा कि, "भगुजी, इस बुढ़िया की छत पर आप रुपये फेंके।" भगुजी ने महाराज के आदेशानुसार जैसे ही दो-चार रुपये फेंके कि, उसकी खनन... खनन... आवाज़ से बुढ़िया क्रोधित हो गई। क्रोधावेश में वह कहने लगें कि, "यह स्वामिनारायण वाले मेरे बेटे बिगड़ गए है।" जैसे ही बुढ़िया ने यह कहा कि, "भगुजी, अब रखिए, रखिए... बुढ़िया का काम हो गया। हमें तो सिर्फ उनके मुंह से एक बार स्वामिनारायण का नाम बुलवाना था। अब हम उन्हें अक्षरधाम में ले जाएंगे।"

पूरे संसार में कोई बलवान आदमी हमेशा ऐसा कहता है कि, जो मेरा नाम किसी ने लिया तो मैं उनकी हड्डी-पसली तोड दूंगा। जबकि श्रीजीमहाराज कहते कि, यदि भूल से भी मेरा नाम लिया तो मैं उद्धार किए बिना नहीं छोडूंगा।

वाह प्रभु, वाह!

श्रीजीमहाराज ने दिया हुआ महामंत्र महासमर्थ है। उससे समस्त अर्थ सिद्ध होते है। फिर भी सब जीव कितने बदकिस्मत है कि, भूल से भी यह मंत्र नहीं बोलते। ऐसा ही एक प्रसंग है। एक बुढ़िया का अंतिम वक्त नजदीक आया था। उनके पड़ोस में एक स्वामिनारायण के भक्त रहते थे। उन्हें पता चला कि अब बुढ़िया का अंतिम वक्त नजदीक आ गया है। उन्होंने नहीं करने जैसे कई कार्य (पाप) जीवन में किए हैं। तो चलो, उनका रास्ता संवार दूं। ऐसा सोचकर उसकी नजदीक जाकर कान में कहा, ''अम्मा, एक बार 'स्वामिनारायण' बोलिए तो आपका अंतिम जन्म हो जाएगा।'' उन्होंने कहा, ''हां, भाई, नाम लूं तो बहुत ही अच्छा है।'' ''तो बोलिए, जय स्वामिनारायण...'' तभी बुढ़िया ने कहा कि, ''यदि बोलूं तो सभी पाप का विनाश होगा।'' उस सत्संगी भाई ने कहा, ''पर बोलिए... एक बार तो बोलिए।''तब बुढ़िया ने फिर कहा, ''अहाहा... यदि बोलूं तो और क्या चाहिए।'' बहुत ही कोशिशें की, पर एक भी बार बुढ़िया ने स्वामिनारायण का नाम नहीं लिया। इसलिए कहा गया है कि,

''जेणे महापाप कर्यां अनंत, जेणे पीड्या ब्राह्मण धेनु संत ;
ते स्वामिनारायण नाम लेतां, लाजी मरे छे मुखथी कहेता।''

इस अद्‌भुत और अलौकिक स्वामिनारायण भगवान के महामंत्र का रटन नामी सहित करें, यानी कि स्वामिनारायण भगवान, जिनका यह मंत्र है, उनका नाम उनकी मूर्ति की स्मृति साथ लिया जाए तो अवश्य महाप्रभु की मूर्ति का सुख मिलें। इसलिए सत्पुरुष ने कहा है कि, ''मुखे तुं स्वामिनारायण बोल, मूर्तिमां रहीने डोल।''

आइए धुन, माला, मंत्र काउन्टर, मंत्र लेखन, जप, स्मरण और डिजिटल माला से... इस तरह किसी भी प्रकार से स्वामिनारायण भगवान को राज़ी करने के लिए, हमारे अनादिकाल के स्वाभाव, प्रकृति और दोषों का प्रलय करने के लिए एवम् महाप्रभु को पसंद है ऐसे दिव्यजीवन की ओर बढ़ने के लिए इस 'स्वामिनारायण' महामंत्र का अवश्य जाप करें।

१६ स्वामिनारायण महामंत्र महात्म्य के कृपावचन

(१) “षडाक्षरी मंत्र महासमर्थ,
जेथी थशे सिद्ध समस्त अर्थ;
सुखी करे संकट सर्वे कापे,
छते देहे मूर्तिधाम आपे ।”

यह है ‘स्वामिनारायण’ छः अक्षर के षडाक्षरी महामंत्र का प्रौढ़ प्रताप । यह है स्वयम् श्रीजीमहाराज के आशीर्वाद । ‘जिससे होगा सिद्ध समस्त अर्थ ’अर्थात् यह महामंत्र के जाप से तमाम कार्य सिद्ध होंगे । सभी संकट कट जाए, और सुखी सुखी कर डालें । क्या हमें महाराज के वचन में विश्वास नहीं है ? तो जुट जाओ... दुःख या प्रश्नों से परेशान होने की जरूरत नहीं । हिम्मत हारने या हताश हो जाने की जरूरत नहीं । बस, चालु करो ‘स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...’ महामंत्र का रटन और अंतर से करो महाराज को प्रार्थना... फिर देखो उसका फल ।

लेकिन हां, धीरज धरनी होगी । एक जगह पे रोज सफाई होती होगी तो जल्दी साफ हो जाएगा लेकिन लंबे अरसे के बाद सफाई करेंगे तो देर लगेगी ही । इस तरह आज दिन तक कुछ किया ही नहीं, इससे महाराज थोड़ी देर लगाएंगे । लेकिन धीरज और विश्वास रख जुट जाओ । श्रीजीमहाराज अति दयालु हैं... जरूर रक्षा करेंगे ही ।

(२) स्वामिनारायण महामंत्र का जाप तीन तरीकों से होता हैं :

कनिष्ठ : जबान से – उच्च्च स्वर से जाप ।

मध्यम : नाभि में से मन में – होठ, दांत, जबान न हिले उस तरह से जाप ।

उत्तम : नामी सहित नाम लेने से – मूर्ति में रहकर, अपनेपन के ख्यालों को छोड़कर (अपने अस्तित्व को छोड़कर) जाप करना।

जैसे सेब नाम बोलने से सेब दिखाई देता है वैसे महाराज का नाम लेने से महाराज की मूर्ति धारें और जाप करें। इसलिए तो कहा है ना कि,

"स्वामिनारायण जीभे रटता, जन्ममरण दुःख जाय;
नामीए सहित नाम ज जपता, मूर्तिमां लेलीन थाय।"

(३) भजन–धून तीन प्रकार से होते हैं और उसके मुताबिक प्रसन्नतारूपी फल मिलता है। जैसे कि,

१. औपचारिकता से अथवा नियम निभाने हेतु होता हो तो वह किया नहीं किया बराबर है। उसका फल १ रुपये जितना होगा।
२. मूर्ति की स्मृति सहित धुन–भजन होगा.. तो उसका फल १००० रुपये जितना होगा।
३. मूर्ति में ओतप्रोत होकर धुन–भजन किया जाए तो प्रसन्नतारूपी फल करोड़ो रुपये जितना मिलें। यह रीतभात बड़े सत्पुरुष से सिखनी होगी।

(४) मन का धर्म है संकल्प–विकल्प करने का। संकल्प–विकल्प का विराम करने का श्रेष्ठ तरीका है स्वामिनारायण महामंत्र का भजन। चाहो तब, चाहो वह स्थान में पवित्र देह से, अपवित्र देह से भजन कर सकते हैं। इसलिए घूमते–फिरते, सेवा करते करते अखंड भजन करना होगा। इससे कम बोलने की आदत पड़ेगी। जिससे (१) व्यर्थ समय बिगड़ेगा नहीं। (२) अंतरवृत्ति होगी। (३) दूसरे नुकसान नहीं होंगे। (४) अंतर शुद्ध होगा।

इस तरह फायदे ही फायदे हैं। इसलिए घूमते–फिरते सभी क्रिया में 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' ऐसे भजन करने की आदत ड़ाल देनी चाहिए।

१७ स्वामिनारायण महामंत्र जाप करने के कई तरीके

(१) स्वामिनारायण महामंत्र धुन

हमारे महुल्ले में, गांव में या घर में प्रतिदिन या सप्ताह में कुछ समय निश्चित कर इस महामंत्र की धुन से वातावरण पवित्र और दिव्य बनाएं, महाप्रभु बहुत प्रसन्न होते हैं।

(२) माला

स्वामिनारायण महामंत्र जाप करने का दूसरा तरीका यह है कि हमारी जितनी उम्र हुई है, उतनी माला तो अवश्य करें और ज्यादा अपनी इच्छा से २५, ५० या १०० माला करें तो अति उत्तम। माला करते समय एकाग्र होना आवश्यक है। भगवान में वृत्ति रखकर मूर्ति धारकर पूरी सावधानी से माला की जाए तो ही उसका फल मिलता हैं और प्रभु प्रसन्न होते हैं।

(३) मंत्र काउन्टर

सत्संग या व्यवहार के सेवाकार्य से कई बार बाहर जाना होता है, उस दौरान थोड़ा सा भी समय मिले तो तुरंत ही मंत्र काउन्टर लेकर ‘स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...’ महामंत्र का जाप शुरू कर दें।

(४) मंत्रलेखन

स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... महामंत्र से मंत्रपोथी लिखें जिसमें दृढ़ संकल्प करें कि रोज मंत्रपोथी के कम से कम १ या २ पेज का मंत्रलेखन करना ही है।

(५) अखंड स्मरण

‘स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...’ इस महामंत्र का आप हर पल, हर क्षण, पूरे समय, अपने मन ही मन प्रत्येक क्रिया में स्मरण करते रहें। इसके

साथ घर में आते या घर से बाहर जाते समय; वैसे ही किसी रिश्तेदार या मित्र को मिले तब; किसी को फोन करें या किसी का फोन आए तब शुरू में और अंत में 'जय स्वामिनारायण', 'जय स्वामिनारायण' बोलने की आदत डालें और डलवाएं।

(६) प्रभातफेरी :

प्रत्येक मास की कृष्णा पक्ष की एकादशी के दिन अपने मुहल्ले अथवा गांव में स्वामिनारायण महामंत्र का उद्‌घोष करते हुए प्रभातफेरी का आयोजन करना चाहिए जिससे समग्र लोगों को लाभ मिलता हैं।

(७) डिजिटल माला :

SMVS एप्लिकेशन में 'मंत्रमाला' के विकल्प से अब कभी भी मोबाइल में ऑनलाइन माला करें।

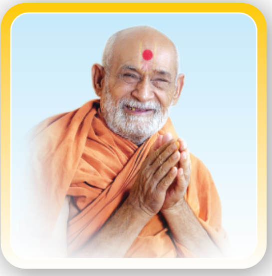

आद्य स्थापक
गुरुदेव प.पू. बापजी

दिव्य प्रेरक
गुरुवर्य प.पू. स्वामीश्री

संस्थापक गुरुदेव प.पू. बापजी
गुरुवर्य प.पू. स्वामीश्री परिचय

"सिद्धांत में समाधान नहीं और नियम-धर्म में छूट नहीं।" - इस सूत्र को जीवनभर धारण करके भगवान श्री स्वामिनारायण की आज्ञा-उपासना और महिमा का सर्वजन के हित में प्रचार करने वाले गुरुदेव प.पू. बापजी एक सिद्धांतवादी सत्पुरुष हैं। गुरुदेव प.पू. बापजी की निर्दोष साधुता, धर्म-नियम की अणीशुद्धता, निर्मानीपन और श्रीजी का कर्तापन आदि गुणों ने लाखों के जीवन में प्रेरणा के पीयूष पीलाए हैं। गुरुदेव प.पू. बापजी ऐसे क्रांतिकारी युगपुरुष है कि जिनके अल्प जोग से मुमुक्षु को भगवान स्वामिनारायण के स्वरूप की यथार्थ पहचान हो जाती है ओर आत्यंतिक कल्याण की प्राप्ति हो जाती है। अवरभाव की ८६ साल की उम्र तक उन्होंने विशेष रूप से पंचमहाल और समग्र गुजरात के अनगिनत गांव में तथा देश-विदेश के अनेक शहरों में विचरण किया था। हजारों भक्तों के घरों की व्यक्तिगत मुलाकात की थी। उनके अथाक प्रयत्नों से लाखों संत-हरिभक्तों के जीवन में परिवर्तन के दीये प्रकाशमान हुए हैं।

उनके क्रांतिकारी कार्यों को और अधिक वेग देकर जन-जन तक उनका संदेश पहुंचाने के लिए गुरुदेव प.पू. बापजी की आज्ञा से प्यारे गुरुवर्य प.पू. सत्यसंकल्पदासजी स्वामीश्री संस्था का नेतृत्व संभाल रहे है। साथ ही गुरुदेव प.पू. बापजी के तमाम कल्याणकारी गुणों को धारण कर आदर्श शिष्यत्व शोभा रहे है। उन्हें स्वयं स्वामिनारायण भगवान ने प्रतिमा से प्रकट होकर दीक्षा दी और आशीर्वाद दिए कि : **"चाहे कैसा भी अधम और पापी जीव हो लेकिन तू उसके मोक्षसंबंधी जो जो संकल्प करेगा वो हम सत्य करेंगें और अंत में मूर्ति के सुख मे पहुंचाएंगे। हम सदैव तेरे साथ है। तेरे सभी संकल्प पूरे होंगे। इसलिए हम तेरा नाम साधु सत्यसंकल्पदास रखते है।"**

आज देश-समाज में आध्यात्मिक उन्नति का कार्य हो या फिर समाज सेवा का अत्यंत कठिन कार्य हो इसमें गुरुवर्य प.पू. सत्यसंकल्पदासजी स्वामीश्री की निरंतर प्रेरणा मिलती रही है। उनकी प्रेरणा से ही **SMVS** संस्था के संत, कार्यकर्ताओ अविरत विचरण करके जीवन परिवर्तन के साथ देहभाव से पृथक् होकर आत्मभूमिका पर जाकर अनादिमुक्त की स्थिति पाकर सदेह स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति का सुख पाने का दिव्य संदेश जन-जन तक पहुंचा रहे है। ऐसी उच्च आध्यात्मिकता के साथ शैक्षणिक सेवाएं, चिकित्सा सेवाएं, भूंकप पीड़ितो की सहायता तथा बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में राहतकार्य की सेवाएं और सरकार द्वारा आते रचनात्मक आयोजनों में भी गुरुवर्य प.पू. स्वामीश्री की प्रेरणा से संस्था सक्रिय रूप से जुड़ती रही है। गुरुदेव प.पू. बापजी और गुरुजी प.पू. स्वामीश्री ने एक बात कही है कि **SMVS** संस्था द्वारा हो रहे सभी सेवाकार्य का श्रेय स्वामिनारायण भगवान के चरणों में ही समर्पित है। उनकी ही दिव्य प्रेरणा से संस्था की आन-बान-शान पूरे विश्व में फैल रही है।

"जब ऐसे बुरे घाट होने लगें,
तब ध्यान छोड़कर जीह्वा से
ऊँची आवाज़ से निर्लज्ज होकर
ताली बजाकर 'स्वामिनारायण...
स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...'
भजन करें तथा ' हे दीनबंधो ! हे दयासिंधो !
इस प्रकार भगवान की प्रार्थना करें तथा
भगवान के संत जो मुक्तानंद स्वामी
जैसे बड़े हों उनका नाम लेकर
उनकी प्रार्थना करें, तो सारे संकल्प
टल जाते है तथा शांति होती है ।
परंतु इसके अतिरिक्त संकल्प टालने का
अन्य कोई उपाय नहीं है ।"

- लोया प्रकरण का ६ठवाँ वचनामृत

स्वामिनारायण मंदिर वासणा संस्था